हम Hum
देखेंगे Dekhenge

All India
Cultural Newsletter

January 2026

Page 4

United Against A Common Enemy

साझा शत्रु के विरुद्ध साझी लड़ाई के लिए

Page 8, 9

Poems against Imperialism

साम्राज्यवाद के विरुद्ध कविताएं

Page 19

Samudaya 50: A Look Back

समुदाय 50: एक पुनरावलोकन

Dear comrades, friends and well-wishers,

May the New Year bring hope for humanity and strengthen our struggles for a better world! Our greetings especially to the heroic people of Cuba, Venezuela and other Latin American states who have dared to defy Imperialism and to stand up to the threat of colonization which darkens their sky every day! We cannot forget the trials and tribulations of the Palestinian people who are still resisting the violations committed on them by Israel and refusing to accept the predatory 'peace plans' cooked up by Trump. Such struggles sustain our hopes.

At the same time, let us not forget the struggles

प्रिय साथियो, मित्रो और शुभचिंतको,

नया साल मानवता के लिए आशा लेकर आए और एक बेहतर दुनिया के लिए हमारे संघर्षों को और मजबूत करे! हमारी शुकामनाएं, ख़ास कर क्यूबा, वेनेजुएला और अन्य लैटिन अमेरिकी मुल्कों के बहादुर लोगों के लिए। जिन्होंने साम्राज्यवाद को चुनौती देने और उपनिवेशवाद के उस खतरे के खिलाफ खड़े होने का साहस दिखाया है, जो हर दिन उनके आसमान में और अन्धेरा फैलाता है! हम फिलिस्तीनियों की दिक्कतों और जद्दोजहद को नहीं भूल सकते। जो अब भी इजराइली ज़ुल्मों का विरोध कर रहे हैं। ट्रम्प रचित शिकारी 'शांति-योजनाएं' स्वीकारने से मना कर रहे हैं। ऐसे संघर्ष ही हमारी उम्मीदें बचाए रखते हैं।

साथ ही, मौजूदा अराजकता और हिंसा के बीच, हमारे पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में आज चलाए जा रहे उन संघर्षों को भी हम

that are being carried out today in our immediate neighbourhood, in Bangladesh, to keep alive in the midst of the present chaos and violence the flame of the War of Liberation which had brought that country into being. We may recall that secession from Pakistan was the ultimate result of a massive national churning on the question of the autonomy of language and culture against religious autocracy. Pakistan had identified Urdu as the official language of the Islamic state and weaponized language to turn it into an instrument of domination even as in India today the cry of 'Hindu-Hindi-Hindustan' is being used to exploit religion and language for the political purpose of domination. The formation of Bangladesh expressed the aspiration of its people to be liberated from such brutal cultural enslavement.

The uprising in Bangladesh against the Hasina Regime in August 2024 had started on legitimate democratic demands, but as the state took the path of violence and repression, the movement also seemed to have been infiltrated by forces of fundamentalism and chaos and to have degenerated into mob-rule, lynching, arson, looting and a reign of terror. It continued sporadically even after the putting in place of an interim government which seemed to have little power to control it.

However, contrary to the campaign launched by Hindutva forces on this side of the border, this violence was not targeting the Hindu minorities in Bangladesh alone, it was directed against religious minorities and political opponents of all kinds including leftists, and more importantly against the basic principles of secularism and democracy which had been the living spirit of the War of Liberation. National monuments commemorating that War were destroyed or defaced, Sufi *mazars* and *akharas* of bauls were desecrated and the followers of these heterodox sects beaten up or ousted; cultural icons like Rabindranath and Nazrul were vilified and slogans were raised even against the patriotic Tagore-song adopted long back as the national anthem of Bangladesh.

All this was part of a religious-nationalist campaign against the supposed 'lackeyism of Indian culture' which is ironical in view of the fact that on this side of the border for quite some time now, in some of

न भूलें, जिन्होंने उस मुक्ति-संग्राम की ज्योत जलाए रखी है, जिससे वह देश अस्तित्व में आया था। याद किया जा सकता है कि भाषाई और सांस्कृतिक स्वायत्तता के मसले पर मजहबी निरंकुशता विरुद्ध चले एक विशाल राष्ट्रीय मंथन का अंतिम नतीजा था -पाकिस्तान से विच्छेद । उर्दू को इस्लामी-राष्ट्र की राजभाषा बना कर पाकिस्तान ने भाषा को वर्चस्व के एक हथियार में बदल दिया था। ठीक वैसे, जैसे आजकल भारत में राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के लिए 'हिंदू-हिंदी-हिंदुस्तान' का नारा लगा कर धर्म और भाषा का दोहन किया जा रहा है। बांग्लादेश का बनना, क्रूर सांस्कृतिक दासता से मुक्ति की वहां की जनाकांक्षा का प्रकटीकरण था।

बांग्लादेश में हसीना-राज के विरुद्ध अगस्त 2024 में हुआ विद्रोह वैध जनवादी मांगों के साथ शुरू हुआ था। मगर, जैसे-जैसे शासन ने हिंसा और दमन का रास्ता अपनाया, आंदोलन में भी कट्टरपंथी-अराजक ताकतों की घुसपैठ होती गई। वह भीड़-तंत्र, लिंचिंग, आगजनी, लूटपाट और आतंक में बदलता गया। एक अंतरिम सरकार, जिसके पास इसे नियंत्रित कर सकने की बेहद कम ताकत जान पड़ती थी, के बन जाने के बाद भी छिटपुट तौर पर वह चलता रहा।

यद्यपि सीमा के इस ओर हिंदुत्व की शक्तियों द्वारा चलाए जा रहे प्रचार-अभियान के विपरीत बांग्लादेश में वह हिंसा केवल हिंदू अल्पसंख्यकों को ही निशाना नहीं बना रही। बल्कि, वह तमाम धार्मिक अल्पसंख्यकों और वामपंथियों सहित राजनीतिक विरोधियों के भी खिलाफ थी। इससे भी बढ़ कर, वह मुक्ति-संग्राम की आत्मा रहे धर्मनिरपेक्षता और जनतंत्र जैसे बुनियादी सिद्धांतों के विरुद्ध थी। संग्राम की याद दिलाने वाले राष्ट्रीय स्मारक उस हिंसा में नष्ट-भ्रष्ट किये गये। सूफी-मज़ारें और बाउलों के अखाड़े अपवित्र किये गये। वैचारिक तौर पर अलग इन संप्रदायों के अनुयायियों को पीटा और खदेड़ा गया। रवींद्रनाथ और नजरूल जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों की निंदा की गई। बहुत पहले बांग्लादेश का राष्ट्रगीत बनाये जा चुके टैगोर के देशभक्ति-गीत विरुद्ध भी नारे लगाए गए।

यह सब कुछ एक मजहबी कौम-परस्त मुहिम का हिस्सा था, जो कथित तौर पर 'भारतीय संस्कृति की चापलूसी' के विरोध में था। इस सचाई कि सरहद के इस तरफ लम्बे समय से कुछ भाजपा शासित प्रान्तों में बंगाली-भाषी प्रवासी मजदूरों (जिनमें से अनेक मुसलमान हैं) को 'बांग्लादेशी' बताकर पीटा या भगाया जाता रहा है, के मद्देनज़र जो बेहद विडंबनापूर्ण है। सीमा के दोनों तरफ भाषा और सांस्कृतिक विविधता पर हमला हो रहा है। भारत में भाजपा-आरएसएस का सांप्रदायिक कट्टरता का ऐसा खुला प्रदर्शन बांग्लादेश की वर्तमान परिस्थितियों में उग्रवादी आग को हवा दे सकता है।

इस सबके बीच किन्तु बांग्लादेश के लोगों में मुक्ति-संग्राम के सेकूलर-जनवादी मूल्यों के प्रति दृढ़ साहस के उत्साह-जनक संकेत भी मिल रहे हैं। फरवरी 2026 में आम चुनाव करवाए जाने की घोषणा के बाद बांग्लादेश के कुछ प्रमुख सांस्कृतिक संगठनों

our states under BJP rule Bengali-speaking migrant workers (many of them Muslims) are being lynched or driven out as 'Bangladeshis'. On either side of the border, the diversity of language and culture is under attack. Such open display of communal fanaticism by BJP-RSS in India is likely to stoke the flames of fanaticism in Bangladesh too in its present state.

But in the midst of all this, there are heartening signs of the staunch resilience of the secular-democratic values of the War of Liberation among the people of Bangladesh. Some of the prime cultural organizations in Bangladesh like Chhayanat and Udichi founded during the Language Movement of the 1960s and some progressive newspapers like *Pratham Alo* (Bengali) and *Daily Star* (English) have come under attacks from fundamentalist goons recently since the declaration of General Elections to be held in February 2026. Fundamentalist attacks and subversive killings of progressive thinkers, journalists and cultural workers is not something unknown in the history of Bangladesh. The above-mentioned organizations have themselves faced such violence in past years. But now too the interim government under Md. Yunus seems to have done little to prevent the open vandalism and arson by fundamentalist mobs which raged in the central and district offices of these organizations on 18 and 19 December, 2025.

It is heartening, however, to notice that immediately after these attacks, on 20 December itself *Pratham Alo* and *Daily Star* came out, the second with the banner headline 'Unbowed'; Chhayanat was able to save most of its invaluable archives from the fire; and both Chhayanat and Udichi were soon on the road with banners and songs attracting large crowds and declaring their continuing commitment to freedom of expression and thought and diversity of culture.

On this side of the border, it is our bounden duty today to actively counter the BJP-RSS' poisonous campaigns about 'Hindu genocide' in Bangladesh and to intensify our own struggle for pluralism and freedom of thought and expression. People to people contact with our neighbours must also be strengthened.

Malini Bhattacharya
On behalf of the editorial team

छायानट और उदीची (जो 1960 के दशक के भाषा-आंदोलन दौरान स्थापित हुए थे) तथा *प्रथम आलो* (बंगाली) और *डेली स्टार* (अंग्रेजी) जैसे प्रगतिशील अखबारों पर कट्टरपंथी गुंडों ने हमले किये। बांग्लादेश के इतिहास में प्रगतिशील विचारकों, पत्रकारों और संस्कृति-कर्मियों पर तंग-नज़र हमलें और विनाशकारी हत्याएं कोई अनजानी बात नहीं हैं। गुजरे बरसों में भी उक्त संगठनों ने ऐसी हिंसा का सामना किया है। मगर, प्रतीत होता है कि इस बार 18-19 दिसंबर, 2025 को इन संगठनों के केंद्रीय और जिला कार्यालयों में कट्टरपंथी हुजूम द्वारा सरे आम की गई तोड़फोड़ और आगजनी रोकने के लिए मोहम्मद युनूस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने कुछ खास नहीं किया।

हालांकि यह देख कर उत्साह मिलता है कि इन हमलों के तुरंत बाद 20 दिसंबर को ही *प्रथम आलो* और *डेली स्टार* प्रकाशित हुए। दूसरे ने मुख्य शीर्षक लगाया था -'अविजित'(Unbowed)। आग से अपने बेशकिमती अभिलेखागार के बड़े हिस्से को बचा पाने में छायानट कामयाब रहा। जल्द ही छायानट तथा उदीची, दोनों ही, भारी भीड़ आकर्षित कर सकने और अभिव्यक्ति तथा विचारों की आजादी तथा सांस्कृतिक विविधता के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता की घोषणा वाले बैनरों और गीतों के साथ सड़क पर थे।

सरहद के इस तरफ आज हमारा मुख्य दायित्व है कि हम बांग्लादेश में 'हिंदू जनसंहार' बाबत भाजपा-आरएसएस के जहर भरे अभियानों का सक्रिय विरोध करें। बहुलतावाद तथा विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए हमारे अपने संघर्ष तेज करें। हमारे पड़ोसियों के साथ जनता-से-जनता के संपर्क भी मजबूत किये जाने चाहिए।

मालिनी भट्टाचार्य
संपादकीय टीम की ओर से
अनुवाद: मनोज कुलकर्णी

United Against A Common Enemy

Manoj Kulkarni

Artists, writers, intellectuals, thinkers and cultural activists from the fields of music, theatre, cinema, visual arts, dance and literature from across India gathered in Kochi, Kerala from 20 to 22 December 2025. Crossing the boundaries of geography, language, adornment and diverse modes of expression, all these people came together for the first time in the country to participate in the 'Indian Cultural Congress'. Until now, congresses of science, history, sociology and other disciplines have been organized in India but this was the first and much-needed attempt to organize a Cultural Congress. The need for such an initiative was being felt because presently the political power of the country is in such hands, that the direction in and the speed with which they are moving India is deeply worrying. Even a threat to India's rich, plural and diverse cultural heritage.

The ruling class maintains power not just through coercion, but by shaping the cultural narrative, making their ideology seem universal and natural. This hegemony is exercised through institutions like education, media and religion, influencing what people think is 'common sense' this framework of the well-known Marxist thinker Gramsci provides a lens through which the power structures of all countries can be examined. Since Independence, we have seen different political ideologies gradually transforming into dominant power structures. However, the present situation is more disturbing as the current ruling

साझा शत्रु के विरुद्ध साझी लड़ाई के लिए

मनोज कुलकर्णी

भारत के विभिन्न हिस्सों में संगीत, नाटक, सिनेमा, चित्रकला, नृत्य और साहित्य के क्षेत्रों और विविध सांस्कृतिक संगठनों में सक्रिय अनेक कलाकार, लेखक, विचारक और आंदोलनकारी संगठनकर्ता 20 से 22 दिसम्बर 2025 तक केरल के कोच्चि शहर में इकट्ठा हुए। भूगोल, भाषा, भूषा और अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों की सीमाओं को लांघते हुए ये तमाम लोग देश में पहली दफा हो रहे 'इंडियन कल्चरल कांग्रेस' में हिस्सेदारी के लिए एक साथ आए थे। अब तक देश में विज्ञान, इतिहास, समाज-विज्ञान आदि की कांग्रेस होती आई हैं किंतु सांस्कृतिक कांग्रेस आयोजित करने की यह पहली और ज़रूरी कोशिश थी। जिसकी दरकार इस कारण महसूस की जाती रही है कि देश में फिलवक्त जिन हाथों में सत्ता की बागडोर है और जिस गति से जिस दिशा तरफ वे हिंदुस्तान को लिए जा रहे हैं, चिंता-जनक है। हमारी समृद्ध और बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत के विरुद्ध भी।

शासक-वर्ग सिर्फ दबाव के जरिये ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक-आख्यान को आकार देकर अपने विचारों, मूल्यों और संस्कृति को सार्वभौमिक, स्वाभाविक और स्वीकार्य बनाता हैं। ऐसा 'सांस्कृतिक-वर्चस्व' शिक्षा, मीडिया और धर्म-संस्थानों के इस्तेमाल से पाया जाता हैं। ख्यात इतावली मार्क्सवादी विचारक ग्राम्शी के इस आंकलन की कसौटी पर तमाम देशों की सत्ताएं कसी जा सकती हैं। आज़ादी के बाद से हमने अधिकतर राजनेताओं को नवसामंतों में रूपांतरित होते देखा हैं। इस बार का मामला लेकिन अधिक दिक्कत-तलब है कि वर्तमान सत्ताधारी-वर्ग नफरत और विभाजन का पैरोकार है। सोवियत-खेमे के न रह जाने बाद वैश्विक स्तर पर हुए दक्षिणपंथी उभार के दौर में भारत में फिरका-परस्त राजनीति शक्ति अर्जित करती गयी है। विगत ग्यारह-बारह सालों से केंद्रीय सत्ता-सूत्र उसी के हाथों में है। सूबाई सत्ताओं तक उसके पहुंचने की शुरुआत कुछ और पहले हो चुकी थी।

class thrives on hatred and divisive policies. After the decline of the Soviet bloc, as the right-wing forces started rising globally, communal politics in India has gained strength steadily with that. For around two decades now central power has remained firmly in the same hands. Influence of which had begun to spread up to state governments even before.

'Hindutva-communalism', wrapped in somewhat attractive rapper of 'cultural nationalism', in collusion with global capital and a few corporate houses, has advanced rapidly. For their project of turning the country into a 'Hindu nation' weakening the 'Constitution' is essential, hence undermining democracy and dismantling democratic institutions and traditions became their central agenda. Shamelessly, through linking religion with every political, social, and economic matter, this ideology has consistently marginalising minorities, Adivasis, Dalits, and women.

To give the country a monochromatic hue, the ruling class has started taking control of each & every, small or big, educational institution. Through arbitrary changes in curricula, superstitions are being passed off as science and mythology as history. Mainstream media has undergone a complete transformation. The press, instead of remaining free, impartial and fearless, is largely serving a few corporate houses and indirectly has turned into a mouthpiece for the ruling party. Journalists, who refuse to toe the government line are trapped in legal cases on one or another pretext.

In such difficult times, protecting constitutional values of secularism, civil liberties, equality, fraternity, justice and human dignity is possible through a strong, farsighted cultural movement only. The responsibility for such a struggle will fall upon those whose hands have already risen in defence of these principles. This fact is deeply troubling that over the past few decades, in India, the number of people working towards modern values and the creation of a progressive, democratic society has declined. Even so, the voices that continue to rise in support of these rights and principles must now be united, is the urgent need of the hour. The 'Indian Cultural

'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' जैसे आकर्षक मुलम्मे में ढक कर आगे बढ़ायी जाती 'हिंदुत्ववादी सांप्रदायिकता' वैश्विक पूंजी और चुनिंदा दरबारी कारपोरेट घरानों से सांठ-गांठ कर यहां तक पहुंची है। देश को 'हिंदू-राष्ट्र' बना देने की परियोजना के लिए 'संविधान' को कमज़ोर करना ज़रूरी है लिहाजा जनतंत्र का अवमूल्यन और जनवादी संस्थानों तथा परिपाटियों को ध्वस्त करना उसका मुख्य एजेंडा है। तमाम राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मामलों में 'धर्म' का बेशर्म घालमेल कर अल्पसंख्यक समुदायों के साथ ही आदिवासियों, दलितों और स्त्रियों को भी वह लगातार हाशिये पर धकेल रही है।

इस देश को एक रंग से पोत देने पर आमादा मौजूदा सत्ताधारी-वर्ग शिक्षा के सारे छोटे-बड़े संस्थान कब्जा रहा हैं। पाठ्यक्रमों में मनमाने बदलावों से अंध-विश्वासों को विज्ञान और मिथकों को इतिहास बना रहा है। मुख्यधारा के मीडिया की वह काया पलटा चुका है। प्रेस की आवाज़ स्वतंत्र, निरपेक्ष और निडर न रह कर किसी कारपोरेट-घराने की चाकर और प्रकारांतर से सत्ताधारी-दल का भोपू बन चुकी है। सरकार की हां में हां न मिलाने वाले पत्रकारों पर इस या उस हवाले से कानूनी फंदे कसे जा रहे हैं।

ऐसे मुश्किल दौर में धर्म-निरपेक्षता, नागरिक आज़ादी, बराबरी, मैत्री, इंसाफ और मानवीय गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों को बचाने का आगाज़ किसी मज़बूत और दूरदर्शी 'सांस्कृतिक' अभियान से ही संभव है। ऐसी किसी मुहीम का जिम्मा उन्हीं कांधों पर होगा, जिनके हाथ इन उसूलों की हिमायत में उठे हुए हैं। हालांकि आज यह सचाई खासा परेशान करती है कि गुज़रे दशक में भारत में आधुनिक मूल्यों की चिंता और तरक्कीपसंद-जनवादी समाज निर्माण का काम करने वालों की तादात घटती गयी है। तब भी, जितनी भी आवाजें, ऐसे हकूक और उसूल के पक्ष में उठती रही हैं, उन्हें एकजुट करना आज की ज़रुरत है। इंडियन कल्चरल कांग्रेस, उसी की शुरुआत है।

देश में अवैज्ञानिक-सोच, पुरातनपंथ, अंधविश्वासों को बढ़ावा दिये जाने के साथ ही धर्म, जाति, भाषा या जेंडर आधारित भेदभाव पर मुखर रही कुछ शख्सियतों की हत्या अथवा गिरफ्तारियों ने अघोषित सेंसरशिप का वातावरण बना दिया है। 'सरकार' के विरोध को 'देशद्रोह' करार दिये जाने से व्याप्त भय के बीच बेखौफ आवाज़ों को एकजुट कर प्रतिरोध तैयार करने की 'सांस्कृतिक' मुहीम तहत कुछ सांस्कृतिक संगठनों और कला-साहित्य की अकादमियों द्वारा केरल सरकार के सहयोग से यह 'सांस्कृतिक कांग्रेस' आयोजित की गयी।

कोच्चि के सुभाष पार्क और राजेंद्र मैदान जैसे खुले सार्वजनिक स्थानों पर विभिन्न मंडपों में आयोजित समानांतर सत्रों में देश भर से आए डेढ़ सौ के करीब प्रतिनिधियों और प्रमुख सांस्कृतिक हस्ताक्षरों ने हिस्सेदारी की। तीन दिनों तक नाटक, प्रतिरोध और बदलाव, मीडिया, राज्य और समाज, मीडिया की सांस्कृतिक

Congress' marks the beginning of that effort only. Alongside the promotion of unscientific thinking, orthodoxy and superstition, the murders and arrests of the individuals expressing their views about the discriminations on the basis of religion, caste, language or gender have created an atmosphere of undeclared censorship. Branding opposition to the government as 'anti-national' has fostered widespread fear, yet voices of resistance are trying to unite to pose a cultural response. Under this cultural initiative, with the support of the Kerala government, various cultural organizations and academies of Art and Literature organized this Cultural Congress.

Open public spaces such as Subhash Park and Rajendra Maidan in Kochi hosted parallel sessions across multiple venues. Nearly 150 delegates and prominent cultural figures from across the country participated in the Congress. For three days, intense intellectual discussions were held on more than thirty issues including Theatre, Resistance and Change; Media, State and the Society; Cultural Ethics of the Media; The Role of writers; Cultural Politics of Contemporary Cinema; The current role of visual arts; the crisis in the Education sector; Myths and Science in the contemporary era and strategies of cultural resistance. In evening sessions Theatre groups from New Delhi, Telangana and Haryana performing plays on different stages. In addition, writers from across the country, representing diverse languages, read from their own works or from historically significant texts of India and the world.

Inaugurating the Cultural Congress, Kerala Chief Minister Pinarayi Vijayan rightly emphasized that only intellectual honesty and moral courage can protect secularism, democracy and social justice. What is happening in the country today is not merely a cultural clash but a struggle over the very idea of India — a fight for diversity, equality, and constitutional morality.

It was particularly meaningful that discussions on confronting the complex, multi-layered cultural challenges of our time took place in Kerala. This state's historical background of social reform movements, its vibrant cultural and intellectual traditions and its politically conscious public make it especially

नैतिकता, लेखकों की भूमिका, आधुनिक सिनेमा की सांस्कृतिक राजनीतिए चित्रकला की वर्तमान भूमिका, शिक्षा-क्षेत्र के मौजूदा संकट और समकालीन दौर में मिथक और विज्ञान तथा सांस्कृतिक प्रतिरोध की रणनीतियों जैसे तीस से ज़्यादा मसलों पर बौद्धिक-विमर्श चला। साथ ही सायंकालीन सत्रों में नयी दिल्ली, तेलंगाना और हरयाणा से आए नाट्य-समूहों ने अलग-अलग मंचों पर अपनी रंग-प्रस्तुतियां दीं। जटिल यथार्थ की रचनात्मक पड़ताल करते ऐसे प्रयोगों के अलावा एक मंच पर देश भर से आए विविध भाषा-भाषी रचनाकारों ने खुद अपनी अथवा देश-दुनिया की ऐतिहासिक महत्व की रचनाओं का पाठ किया।

'कल्चरल कांग्रेस' का उद्घाटन करते हुए केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन ने ठीक ही रेखांकित किया कि बौद्धिक ईमानदारी और नैतिक साहस से ही हम सेकूलरवाद, जनवाद और सामाजिक-न्याय की रक्षा कर सकते हैं। देश में आज जो कुछ हो रहा हैं, महज सांस्कृतिक टकराव नहीं बल्कि 'भारत' की अवधारणा के लिए संघर्ष है। विविधता, समता और संवैधानिक नैतिकता के पक्ष में लड़ाई है।

कला-साहित्य के विविध माध्यमों के जरिये इस दौर की बहुआयामी सांस्कृतिक चुनौतियों से सामना करने के तरीकों और औजारों पर व्यापक चर्चा की शुरुआत केरल जैसे प्रदेश की पृष्ठभूमि में होना निःसंदेह मानीखेज है। पुनर्जागरण आंदोलनों द्वारा जातीय वर्चस्व को ललकारने के समृद्ध इतिहास वाले इस प्रदेश की अधिकांश जनता न केवल साक्षर है बल्कि उच्च-शिक्षित और पर्याप्त सचेत है। केरल की सामाजिक प्रगति, वहां की जीवंत सांस्कृतिक और बौद्धिक परम्पराओं की देन ही है।

अवाम की गहरी राजनीतिक चेतना और उल्लेखनीय सामाजिक परिवर्तनों में वहां के दूरस्थ गांवों तक पहुंचे पुस्तकालयों और उनसे विकसित पठन-पाठन संस्कृति की भूमिका को नकारा जा सकता है ? वहां के जनांदोलनों के साथ साहित्य और रंगमंच के गहरे जुड़ाव को समझने से इतर हिस्सों के जनांदोलनों को आगे के रास्ते मिल सकते हैं। केरल में जातीय उत्पीड़न, सामंती-शोषण और सामाजिक विषमता को दी गयी कड़ी चुनौती में इन सांस्कृतिक कारको का व्यापक योगदान रहा है। अनायास और अकारण नहीं है कि केरल में वामपंथी राजनीति को व्यापक स्वीकार्यता मिली है। भारत के ज़्यादातर प्रांतों की अपेक्षा केरल की विशेष 'तरक्की' के पीछे प्रगतिशील-जनवादी राजनीति के योगदान को कैसे नकारा जा सकता है?

ऐसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सुरम्य समुंदर के परिदृश्य में 'इंडियन कल्चरल कांग्रेस' की हलचलें उपस्थित प्रतिनिधियों और श्रोताओं के लिए सांस्कृतिक और वैचारिक तौर पर समृद्ध करने वाली रहीं। प्रतिनिधियों की विचारोत्तेजक चर्चाओं के अलावा अपनी-अपनी विधाओं के जुझारू और नामी हस्ताक्षरों के साथ हुए सार्थक संवादों में इस वक्त की विडम्बनाएं उद्घाटित, विश्लेषित और परिभाषित हुईं। प्रतिरोध के रास्ते चिह्ने और

significant. Kerala's achievements in social progress owe much to its progressive, democratic politics and its deep links between Literature, Theatre and mass movements. Caste oppression, feudal exploitation and social inequality in Kerala have been challenged vigorously, with cultural forces playing a major role. It is no coincidence that left-wing politics has found wide acceptance here. How can the role of progressive democratic politics be ignored in Kerala's better development in comparison to most other states of India?

Against this historical and cultural backdrop and amid Kerala's scenic seascapes, the 'Indian Cultural Congress' became a space for deep cultural and intellectual engagement for participants and audiences alike. Beyond formal discussions, meaningful dialogues took place across disciplines, exposing and analysing the contradictions of our time and identifying paths of resistance and long-term strategies. I believe, such distinctive cultural gatherings should rely more on cultural practitioners than politicians for ideological direction. The heavy administrative formalities and security arrangements that accompany political presence often burden such events, and there is always the risk that invited thinkers and artists, and their valuable ideas, may sometime remain unnoticed. There was also room to improve the Congress's visual presentation and publicity materials. Although the event was national, information and announcements could not include English and Hindi adequately. At the closing ceremony, renowned scholar Ganesh Narayan Devy announced that the next Congress would be held in Dharwad, Karnataka. Given Dharwad's association with cultural stalwarts like Gangubai Hangal, Mallikarjun Mansur, Girish Karnad, poet D. R. Bendre and painter K. K. Hebbar, expectations for the next edition are understandably high.

At the closing ceremony T.M. Krishna, celebrated Kannada singer, writer, social activist and a fearless voice against caste and class discrimination, presented Faiz Ahmed Faiz's iconic poem 'Hum Dekhenge' (We Shall See) in five languages — Urdu, Malayalam, Telugu, Kannada and Tamil. Symbolically, there could be no stronger message then this from the Indian Cultural Congress: cultural activists must weave

लामबंदियों के संभावित मुद्दें पहचाने जा सके। मेरा अपना ख्याल है कि ऐसे विशिष्ट सांस्कृतिक आयोजनों को राजनीतिक दृष्टि और मार्गदर्शन देने के लिए भी सांस्कृतिक हस्तियों पर ही अधिक निर्भर रहा जाना चाहिए।

किसी भी गंभीर आयोजन में राजनेताओं की उपस्थिति के कारण होने वाली लम्बी और उबाऊ प्रशासनिक औपचारिकताएं और रौबदार पुलिसियां बंदोबस्त अक्सर आयोजन को बोझिल बना देते हैं। स्थानीय राजनेताओं के इर्द-गिर्द की धूमधाम में बहुदा आमंत्रित विद्वानों और कलाकारों तथा उनके बहुमूल्य विचारों के अलक्षित छूट जाने की आशंका रहती हैं। 'इंडियन कल्चरल कांग्रेस' की साज-सज्जा और प्रचार-सामग्री को भी और सुरुचिपूर्ण बना सकने की गुंजाइश थी। आयोजन प्रादेशिक अथवा आंचलिक नहीं, राष्ट्रीय था किंतु कार्यक्रम संबंधी सूचनाओं और घोषणाओं में अंग्रेज़ी/हिंदी के उचित समावेष का अभाव रहा। समापन समारोह में विख्यात विद्वान गणेश नारायण देवी ने अगली कांग्रेस कर्नाटक के धारवाड़ शहर में किये जाने की घोषणा की। महान गायकों गंगूबाई हंगल, मल्लिकार्जुन मंसूर, सुख्यात नाटककार और अभिनेता गिरीश कर्नाड, कवि डी.आर. बेंद्रे और प्रसिद्ध चित्रकार के.के. हेब्बार जैसी सांस्कृतिक हस्तियों से जुड़े इस शहर में होने वाले आगामी आयोजन में इस बाबत सावधानी बरती ही जा सकती है?

अपने भावपूर्ण कर्नाटकी गायन, लेखन, सामाजिक सक्रियता और जातीय तथा वर्गीय भेदभाव विरुद्ध बेखौफ अभिव्यक्ति के लिए मशहूर टी.एम. कृष्णा ने समापन के अवसर पर ख्यात शायर फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की महान नज़्म 'हम देखेंगे, लाज़िम है कि हम भी देखेंगे' को पांच भाषाओं उर्दू, मलयालम, तेलुगू, कन्नड़ और तमिल में गाया। प्रतीकात्मक तौर पर 'इंडियन कल्चरल कांग्रेस' का इससे सशक्त कोई और संदेश नहीं हो सकता कि सांस्कृतिक आंदोलनकारियों को इसी तरह अपने अलग-अलग स्वरों को एक साथ पिरो कर संघर्ष का नारा बूलंद करना होगा। सिमटते लोकतंत्र के इस दौर में तटस्थ नहीं रहा जा सकता। ऐसा करना यानी नाइंसाफी को समर्थन होगा। इसी कारण सांस्कृतिक-प्रतिरोध के लिए ज़रूरी है कि भारत की सांस्कृतिक विविधता के पक्षधर तमाम आंदोलन, संगठन, संस्थाएं, समूह और लोग अपनी-अपनी अलग पहचानें बनाये रख कर भी आज के दौर के सबसे बड़े सांस्कृतिक खतरें का सामना करने के लिए साझा कार्यक्रम बनाएं।

उम्मीद की जा सकती है कि इस कल्चरल कांग्रेस की प्रेरणा से देश भर में प्रदेश, जिला, शहर और गांव स्तर पर ऐसे आयोजनों की श्रृंखला निर्मित की जा सकेगी। 'कल्चरल कांग्रेस' को तमाम तरह के प्रगतिशील-जनवादी सांस्कृतिक आंदोलनों, संगठनों, संस्थाओं, समूहों और व्यक्तियों के एक समावेशी 'नेटवर्क' में बदला जा सकता है, जो मनुष्य मात्र के लिए ज़रूरी 'कला' और 'संस्कृति' को अभिजनवादी होने से बचा कर उसे जन-आंदोलन बनाने की दिशा में काम करे।

their diverse voices together to raise a collective call of resistance. In these times, when the democratic is shrinking, neutrality is nothing but to support injustice. Therefore, for cultural resistance to be effective, all movements, organizations, institutions, groups and individuals committed to India's cultural diversity, while retaining their distinct identities, must also create shared platforms to confront the biggest cultural threat of our times. It is hoped that the inspiration of this Cultural Congress will lead to a series of similar events at the state, district, city and village levels across the country. The Cultural Congress can evolve into an inclusive network of all progressive, democratic cultural movements, organizations, institutions, groups and individuals — one that prevents art and culture from becoming elitist and instead transforms them into people's movements essential for humanity.

Cultural activists assembled at the Kochi Cultural Congress brought out an important declaration reaffirming their commitment to secularism, peace, freedom and human dignity. One may hope that this will mobilize the masses for a shared struggle against the challenges of our times and help carry cultural consciousness from villages to workplaces and streets.

Poems against Imperialism Justice Incarnate

Malini Bhattacharya

My Lord, Justice Incarnate,
I swear Venezuela was nothing to me
Until you yourself put it on my map
When you infringed their waters,
Captured their fishing-boats,
Took custody of their oil-ships
And bombed their thoroughfares!
And then with your master-spy technique
Lifted them in manacles and
Like the mighty simian Bajrang
Cleared the seas with one great leap!
Everyone clapped and said: What a marvel!
The credit can belong to Him and none else!

From that day in my blood

कोच्चि की कल्चरल कांग्रेस में इकट्ठा संस्कृतिकर्मियों ने एक महत्वपूर्ण घोषणापत्र जारी किया, जो धर्म-निरपेक्षता,शान्ति, स्वतंत्रता और गरिमा की फिर प्रतिष्ठा का संकल्प दोहराता है। उम्मीद की जा सकती है कि यह अपने समय की चुनौतियों से साझा संघर्ष के लिए जनता की लामबंद कर सकेगा। जिससे 'सांस्कृतिक चेतना' को गांवों बल्कि कामगारों के कामकाज की जगहों और सड़क के राहगिरों तक ले जाया जा सके।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध कविताएं न्याय के अवतार

मालिनी भट्टाचार्य

हे प्रभु, न्याय के अवतार!
कसम खाता हूं, मेरे लिए कुछ नहीं था वेनेज़ुएला
जब तक खुद आपने ही न रख दिया, उसे मेरे नक्शे पर
जब आपने किया उनकी जल-सीमा का उल्लंघन
धर पकड़ी उनकी मच्छी-मार नौकाएं,
लिया हिरासत में उनके तेल-जहाज़ों को
और बरसाए बम उनके राजमार्गों पर!
और तब अपनी कुशल-जासूसी तकनीक से
जकड़कर बेड़ियों में, उठा लिया उन्हें
और महान वानरदेव बजरंग की तरह
लांघ डाला सागर एक भव्य छलांग में!
तालियां बजाई सबने और कहा: अद्भुत!
श्रेय उन्हीं को जा सकता है, किसी और को नहीं!

उसी रोज़ से रक्त में मेरे
मिलने लगा उनका खून-पसीना
उत्तेजित-विष के भव्योत्सव में!
हे प्रभु, आप ही हैं
जिसने बना दिया, मुझे गद्दार
अब कहता हूं मैं, फिलिस्तीन को वतन अपना
मैं कहता हूं, क्यूबा को अपना देश

मैं कहता हूं, वेनेज़ुएला को अपना देश
अन्यथा

Their blood and sweat started getting mingled
In this magnificent festival of churned-up poison !
My Lord, it is you
Who have made a traitor of me,
Now I call Palestine my country,
I call Cuba my country,
I call Venezuela my country,
Otherwise
How can I call
India my country?

Have Faith

Shubha

This is not just violence
not an accident
not merely a series of misfortunes
Genocide and the incoherence of opposing directions
is not coincidence merely

This is a monopolizing campaign
from culture to nature
from history to the future
a bloody campaign of a cryptic conspiracy
This is the transposition of humanity
the transposition of nature

The earth is upset
the kids are intimidated
Women are restless
those who love to work are distressed

Hurt is more than just anger
the desire to settle is greater than the pain
compassion is greater than gunpowder
superior to compassion
is the call for justice

Translation: Manoj Kulkarni

Cover image: Illustration by CHema Skandal!

कैसे कह सकता हूं मैं
भारत को
वतन अपना ?

अनुवाद: मनोज कुलकर्णी

Artist: Blanca F. Tomé, *Flyers for Falastin*

भरोसा रखें

शुभा

यह सिर्फ़ हिंसा नहीं है
कोई दुर्घटना नहीं है
मात्र दुर्घटनाओं का तांता नहीं है
जनसंहार और उलट दिशाओं की असंगति
सिर्फ़ संयोग नहीं है

ये एकाधिकार अभियान है
संस्कृति से प्रकृति तक
इतिहास से भविष्य तक
गूढ़ साजिश का ख़ूनी अभियान

यह विपर्यय है मनुष्य का
विपर्यय प्रकृति का

धरती नाराज़ है
बच्चे सहमे हैं
स्त्री विकल है
मेहनत से प्यार करने वाले बेहाल हैं

नाराज़गी से ज्यादा है दुख
दुःख से ज्यादा है बसने की इच्छा
बारूद से ज़्यादा है करुणा
करुणा से बहुत ऊंची है
न्याय की पुकार

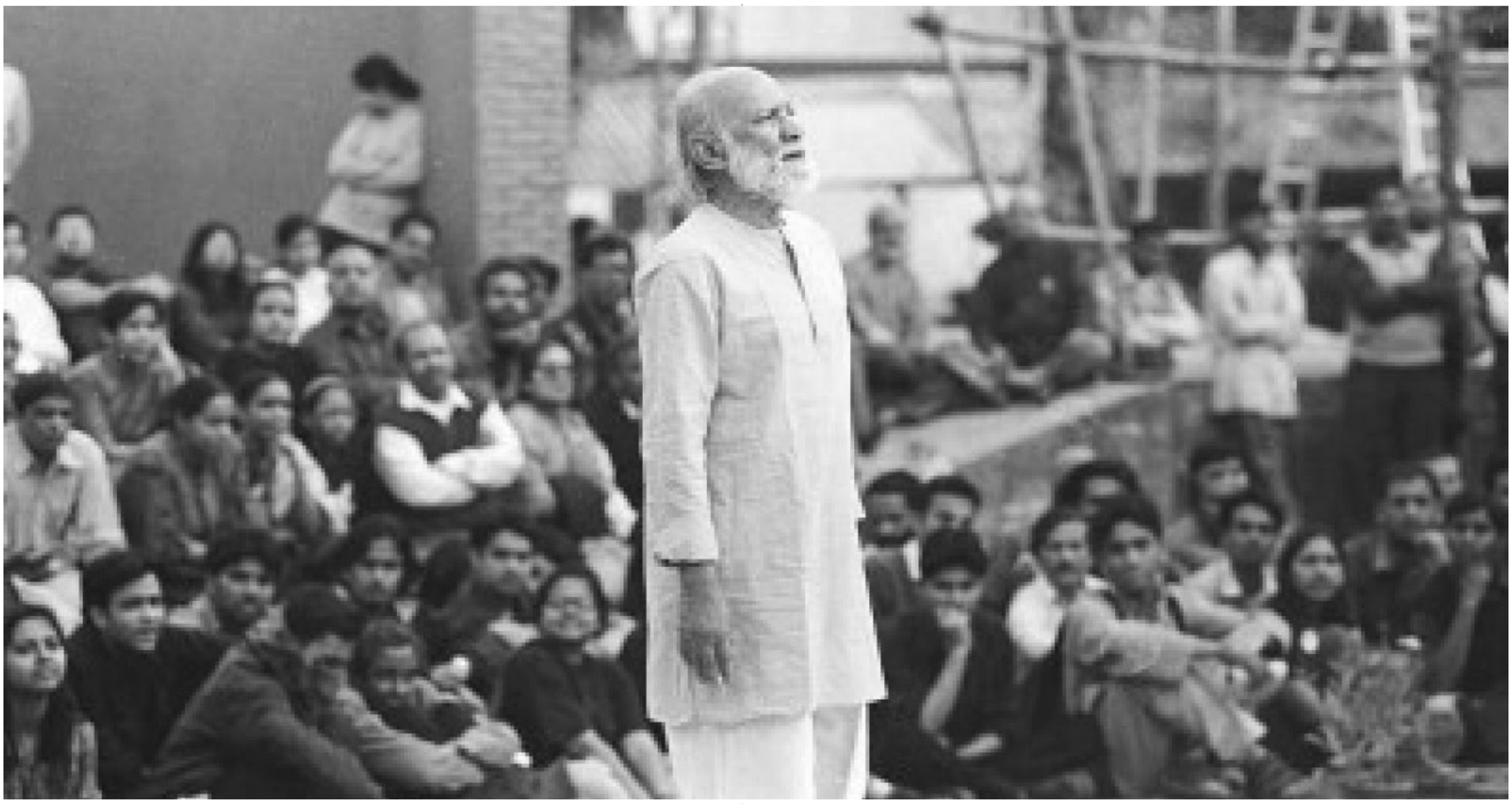

On Samudaya and Badal Sircar: a nostalgic travel

Pralayan

Dear friends and comrades,

It is a matter of deep joy to stand here and celebrate the 50th anniversary of Samudaya, one of the pioneering cultural movements of South India. On behalf of Chennai Kalai Kuzhu and the people's cultural movement of Tamil Nadu, I extend revolutionary greetings and solidarity to the comrades of Samudaya. For many of us, Samudaya is not merely an organisation; it is an experience, an influence, and a turning point in our artistic and political journeys.

My association with Samudaya begins in memory, in my college days. In 1978, the Bengaluru unit of Samudaya came to Tamil Nadu to perform at the Tamil Nadu Progressive Writers' Association conference in Coimbatore. They staged 'Oh! Chasnala!', a mime play based on the tragic coal mine disaster in Chasnala, Bihar, where 43 workers were drowned. The performance was stark and stripped down—no elaborate sets, no costumes, no stage décor. The actors relied entirely on their bodies, voices, and expressions. Almost wordless, the play recreated the horror of that industrial tragedy through movement and silence.

समुदाय और बादल सरकार: एक स्मृतिमय यात्रा

प्रलयन

प्रिय मित्रो , साथियो और कॉमरेड्स,

दक्षिण भारत के जन-सांस्कृतिक आंदोलनों के इतिहास में मील का पत्थर रहे समुदाय के पचास वर्ष पूरे होने के इस ऐतिहासिक अवसर पर यहाँ उपस्थित होकर मुझे गहरी प्रसन्नता और गर्व का अनुभव हो रहा है। अपने समूह चेन्नई कलै कुझु तथा तमिलनाडु के जन-सांस्कृतिक आंदोलन की ओर से मैं समुदाय के सभी साथियों को क्रांतिकारी अभिवादन और हार्दिक एकजुटता प्रेषित करता हूँ।

आज इस अवसर पर मेरी स्मृतियाँ मुझे अपने कॉलेज के दिनों में ले जाती हैं—उस समय में, जब रंगमंच मेरे लिए केवल एक कला नहीं, बल्कि एक खोज, एक प्रश्न और एक संभावना बन रहा था। सन् 1978 की बात है। समुदाय पहली बार तमिलनाडु आया था। यह समुदाय की बेंगलुरु इकाई थी, जिसने कोयंबटूर में आयोजित तमिलनाडु प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लिया। वहीं उन्होंने 'ओह! चासनाला' नामक एक लघु नाटक प्रस्तुत किया। यह नाटक अपने आप में एक विलक्षण अनुभव था। लगभग पूरा नाटक माइम के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।अंत में केवल कुछ ही शब्द बोले गए। विषय था बिहार के चासनाला की कोयला खदान में पानी भर जाने से 43 मज़दूरों की दर्दनाक मौत। उस प्रस्तुति की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह किसी भी पारंपरिक रंगमंचीय सहारे पर निर्भर नहीं थी—न मंच-सज्जा, न पृष्ठभूमि, न वेशभूषा, न मेकअप। कलाकारों के पास केवल उनका

For audiences used to proscenium theatre, this was something radically new. The performance deeply moved those who witnessed it. I did not see it then, but those who did described it to me with such intensity that I visualised it vividly. Even second-hand, it transformed my understanding of what theatre could be. A new possibility unfolded before me: theatre without ornamentation, theatre as collective expression, theatre that carries political urgency. Inspired by that spark, we began experimenting with theatre in Tiruvannamalai.

In 1979, we participated in a state-level theatre festival organised by the Tamil Nadu Progressive Writers' Association in Thanjavur. Over twenty groups performed. One of the guest speakers was Prasanna of Samudaya, a key figure in shaping its ideological and artistic direction. His speech was electrifying. He spoke about new theatrical practices, about breaking away from conventional forms, about connecting directly with people. Only later did I understand that he was articulating the ideas of Badal Sircar and his concept of Third Theatre.

We had already heard about Prasanna's personal journey—how he left his PhD at IIT to join the National School of Drama. That commitment to theatre inspired admiration among us. During those three days, I spent as much time as I could listening to him. The festival, and especially his speech, drew me deeper into theatre—not merely as performance, but as social engagement.

Around that time, I read *Staging a Change* by Narendar Pani, published by Samudaya. It offered a strong, polemical view of theatre's social responsibility. While some of its arguments may invite revision today, it provided us with theoretical grounding and confidence. For many of us, Samudaya became both a practical model and an intellectual reference point.

In early 1978, before these events, Badal Sircar had conducted a workshop in Bengaluru, jointly organised by the Bengali Association of Bangalore and Samudaya. Sircar's troupe performed 'Procession' and other plays. Over two weeks, he worked closely with Samudaya members. This workshop proved

शरीर था, उनकी आवाज़ थी और उनकी अभिव्यक्ति थी। लेकिन उन्हीं साधनों के सहारे उन्होंने उस त्रासदी को दर्शकों के भीतर उतार दिया।

उस समय इस तरह का रंगकर्म तमिलनाडु के दर्शकों के लिए बिल्कुल नया था। शायद इसी कारण,उस प्रस्तुति ने दर्शकों को गहराई से झकझोर दिया। तालियों के साथ-साथ एक गहरी चुप्पी भी थी , सोच की, संवेदना की। मैं स्वयं उस सम्मेलन में उपस्थित नहीं था। लेकिन जो लोग वहाँ थे, उन्होंने जब उस प्रस्तुति का वर्णन मुझे सुनाया, तो मैंने उसे अपने भीतर देखा, महसूस किया। कह सकता हूँ कि मैंने उस नाटक को सुना नहीं,मैंने उसे कल्पना में जिया। उस अनुभव ने मेरे भीतर रंगमंच की एक नई दुनिया खोल दी। उसी प्रेरणा से हमने अपने गृहनगर तिरुवन्नामलै में कुछ साथियों के साथ मिलकर रंगकर्म की शुरुआत की।

अगले ही वर्ष, सन् 1979 में, हमने 'परिमुथल' नामक एक छोटा नाटक तैयार किया और तंजावुर में आयोजित तमिलनाडु प्रगतिशील लेखक संघ के राज्यस्तरीय नाट्य महोत्सव में भाग लिया। यह तीन दिवसीय महोत्सव था, जिसमें बीस से अधिक नाट्य समूह शामिल हुए। उसी महोत्सव में मेरे जीवन की दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित करने वाली एक घटना घटी। समुदाय के प्रसन्ना उस महोत्सव में अतिथि वक्ताओं में से एक थे। उनका भाषण केवल प्रेरणादायक नहीं था। वह रंगमंच के बारे में सोचने के हमारे तरीकों को चुनौती देने वाला था। उनकी बातों को सुनते हुए मुझे लगा, जैसे मेरे सामने रंगमंच का एक नया भूगोल खुल रहा हो। बाद में समझ में आया कि उनका भाषण बादल सरकार के 'थर्ड थिएटर' की अवधारणा से गहराई से जुड़ा हुआ था।

इसी दौरान हमें यह भी पता चला कि प्रसन्ना ने आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में अपनी पीएचडी बीच में छोड़कर नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली का रास्ता चुना। रंगमंच के प्रति यह प्रतिबद्धता, यह जोखिम, हम जैसे युवाओं के लिए वह किसी प्रेरक कथा से कम नहीं था। उन तीन दिनों में मैंने उनका अधिकतर समय उनके साथ बातचीत करते हुए, रंगमंच पर उनके विचारों को सुनते हुए बिताया। वह महोत्सव और विशेष रूप से प्रसन्ना का भाषण, मुझे रंगमंच के भीतर और गहराई तक ले गया।

1980 के दशक के प्रारंभ में मुझे समुदाय द्वारा प्रकाशित नरेंद्र पाणी की पुस्तक *Staging a Change* पढ़ने को मिली। यह पुस्तक रंगमंच को लेकर एक सशक्त, वैचारिक और कहीं-कहीं विवादास्पद दृष्टि प्रस्तुत करती है। आज भले ही उन विचारों को और विस्तृत या पुनर्विचारित करने की ज़रूरत हो, लेकिन उस समय इस पुस्तक ने मेरी रंगमंचीय समझ को वैचारिक रूप से मज़बूत किया। मेरे लिए यही समुदाय है।

मैंने स्वयं कभी बादल सरकार की कार्यशाला में भाग नहीं लिया, लेकिन जिन लोगों ने मेरे शुरुआती दिनों में मुझे रंगमंच की दिशा दी, वे सभी किसी न किसी रूप में बादल सरकार की रंग-परंपरा

transformative. Gundanna, a former secretary of Samudaya, once told me that it pushed their theatre beyond auditoriums and urban centres. Karnataka then had limited theatre infrastructure. After the workshop, Samudaya embraced open-air and arena performances. They expanded into villages, creating a state-level cultural movement.

Two significant productions emerged from that workshop: 'Oh! Chasnala!' and 'Bathre Sangappa Kole Vivakarana,' directed by Prasanna. Narendar Pani later wrote that Third Theatre techniques were powerfully used during Samudaya's participation in the Chickmagalur Lok Sabha by-election, where four troupes performed over 250 shows to audiences totalling nearly seven lakh people. Theatre had become a living dialogue with rural communities.

Among the major productions of that period was 'Belchi,' written by Krishnaswamy, based on the massacre of Dalit agricultural workers in Bihar. It was a workshop production with newly recruited actors. Samudaya travelled widely with this play, including performances in Chennai in 1979. 'Belchi' demonstrated how political theatre could be immediate, mobile, and accessible.

The ripple effect of these experiments spread to Kerala. In 1978, inspired by reports of Samudaya's travelling theatre, poet-playwright Karivallur Murali initiated open-air performances in Kannur district, naming them 'Kala Jatha' (travelling theatre). This idea was later popularised by the Kerala Sastra Sahitya Parishad (KSSP), the people's science movement. In 1980, Badal Sircar conducted a two-week workshop in Thiruvananthapuram, accompanied by Prasanna. Many participants adopted Third Theatre practices.

One among them was the late Jose Chiramul, a graduate of the Thrissur School of Drama. He staged Sircar's plays like 'Procession,' 'Spartacus,' and 'Boma' in villages. He also designed and directed many KSSP Kala Jatha productions. A striking example was 'Oru Chodyam,' inspired by a poem of Bertolt Brecht. In that play, actors used their bodies to create powerful visual imagery—monuments, ruins, and landscapes—within empty spaces.

से जुड़े रहे। दक्षिण भारत और बादल सरकार के संबंधों पर मैंने विस्तार से लिखा है। यह लेख *Badal Sircar: A Search for a Language of Theatre* (संपादक: कीर्ति जैन, नियोगी बुक्स, नई दिल्ली, 2016) में प्रकाशित है। उसमें उल्लेख है कि 1978 में बेंगलुरु में बंगाली एसोसिएशन और समुदाय के संयुक्त आयोजन में बादल सरकार और उनके समूह 'सदाप्ति' ने प्रस्तुतियाँ दीं—जिनमें 'प्रोसेशन' प्रमुख थी। इसके बाद समुदाय के साथ दो सप्ताह की गहन कार्यशाला हुई।

समुदाय के पूर्व सचिव गुंडन्ना ने उस कार्यशाला को याद करते हुए मुझसे कहा—"बादल सरकार की कार्यशाला ने हमारे रंगकर्म की सीमाएँ तोड़ दीं। हम प्रेक्षागृहों तक सीमित थे। उस कार्यशाला ने हमें खुले मैदानों, एरीना स्पेस और सीधे लोगों के बीच काम करना सिखाया। इसके बाद पूरे राज्य में नए समूह बने और समुदाय एक राज्यस्तरीय संगठन के रूप में उभरा।"

उस कार्यशाला से दो महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ निकलीं—एक, 'ओह! चासनाला!', और दूसरी प्रसन्ना द्वारा निर्देशित 'बाथरे संगप्पा कोले विवकरना', जो एक कार्यकर्ता की हत्या पर आधारित आत्ममंथनात्मक नाटक था। नरेंद्र पाणी लिखते हैं कि थर्ड थिएटर की तकनीक का सबसे प्रभावशाली उपयोग चिकमगलूर लोकसभा उपचुनाव के दौरान हुआ, जहाँ समुदाय की चार टुकड़ियों ने 250 से अधिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें लगभग सात लाख लोगों ने देखा। इसी प्रक्रिया में कृष्णास्वामी का 'बेलची' जैसे नाटक सामने आए—जो बिहार के एक गाँव में दलित मज़दूरों के नरसंहार पर आधारित था।

यह नाटक समुदाय के रंगमंच की राजनीतिक और नैतिक ऊँचाई का प्रतीक बन गया। 'बेलची' के साथ समुदाय ने व्यापक यात्राएँ कीं और सन् 1979 में चेन्नई में भी इसका मंचन हुआ। आज, समुदाय के पचास वर्षों की इस यात्रा को याद करते हुए, मुझे लगता है कि यह केवल एक नाट्य संस्था की कहानी नहीं है—यह जन-संवेदना, प्रतिरोध और रंगमंच के माध्यम से समाज से संवाद करने की एक ऐतिहासिक परंपरा की कहानी है।

सन् 1978 में, समुदाय द्वारा खुले मैदानों और एरीना स्पेस में किए जा रहे घुमंतू नाट्य प्रयोगों की ख़बरें पढ़कर केरल के कन्नूर ज़िले के कवि-नाटककार करिवल्लूर मुरली गहरे रूप से प्रभावित हुए। उन्होंने भी खुले मंचों पर नाटक करना शुरू किया और इन प्रस्तुतियों को आसपास के गाँवों तक ले गए। इस नाट्य यात्रा को उन्होंने नाम दिया 'कला जथा', यानी चलती-फिरती कला, चलता हुआ रंगमंच। यह कोई कल्पना नहीं है।यह तथ्य स्वयं करिवल्लूर मुरली ने मुझसे साझा किया था।

आगे चलकर, 1980 के दशक के आरंभ में, केरल के जनविज्ञान आंदोलन केरल शास्त्र साहित्य परिषद (केएसएसपी) ने इस 'कला जथा' की अवधारणा को बड़े पैमाने पर अपनाया और इसे जनआंदोलन का सांस्कृतिक औज़ार बना दिया।

Our own Chennai Kalai Kuzhu translated and performed some of these works in Tamil. When KSSP organised a Kala Jatha in Tamil Nadu with the Tamil Nadu Science Forum and Pondicherry Science Forum, eight of us joined eight KSSP actors for a two-week workshop in Kanyakumari. I translated the scripts into Tamil, retaining the original choreography and design. We travelled across Tamil Nadu for a month, performing in nearly 140 centres. The response was overwhelming. We learned how open-air spaces challenge and energise performers. Plays like 'Ethirkkanum Koottare' and 'Kuravar Kali' fused traditional forms—Kolkali and Kuravarisai—with contemporary political messages.

In 1987, KSSP spearheaded the Bharat Jan Vigyan Jatha with government support. Five theatre groups travelled across India, performing in multiple languages. I was part of that two-month journey. While these jathas popularised Third Theatre widely, some critics argue that they reduced it to a communication strategy—prioritising message dissemination over aesthetic exploration.

In Tamil Nadu, after the 1980 workshop influence, several groups embraced open-air political theatre. Aswaghosh (Rajendra Cholan) worked with Tirupur hosiery workers to create 'Vattangal,' a collage-style play addressing unemployment, corruption, and exploitation. Folk forms structured the chorus, linking episodic scenes. Similarly, Makkal Kalai Ilakkiya Kazhagam adapted 'Belchi' into Tamil and toured widely.

However, state repression followed. Tamil Nadu police filed numerous cases against performing groups. Even the renowned choreographer Chandralekha faced sedition charges for a solidarity event at Chennai's Marina Beach. Such repression paralysed open-air theatre. Some artists withdrew; others shifted to mainstream formats.

When Chennai Kalai Kuzhu was formed in 1984, we sought to revive these practices. The late 1970s and early 1980s were shaped by the post-Emergency climate. Democratic consciousness was intense. Cultural expression became a site of resistance. In that context, Badal Sircar's Third Theatre resonated deeply.

इसी बीच, सन् 1980 में बादल सरकार ने त्रिवेंद्रम में दो सप्ताह की एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का संचालन किया। इस कार्यशाला में समुदाय के प्रसन्ना भी बादल सरकार के साथ थे। वास्तव में, उस दौर में प्रसन्ना, बादल सरकार के थर्ड थिएटर के सबसे मज़बूत और निर्भीक समर्थक थे।

इससे एक वर्ष पहले, सन् 1979 में, तमिलनाडु के तंजावुर में तमिलनाडु प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नाट्य महोत्सव हुआ था।बीस से अधिक नाट्य समूहों ने उसमें भाग लिया। मैं तब एक छात्र था। अपने गृहनगर तिरुवन्नामलै के सहपाठी मित्रों के साथ हमने दो छोटे नाटक प्रस्तुत किए—'परिमुथल' (जब्ती) और 'वट्टत्तिर्कु वेलिये' (वृत्त के बाहर)।

उस समय मुझे खुले मंच के रंगमंच का कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला था। लेकिन 'ओह! चासनाला' के बारे में जो कुछ मैंने सुना था, वही मेरे लिए दिशा-सूचक बन गया था। उस महोत्सव में मैंने कुछ अत्यंत परिपक्व खुले मंच के नाटकों को देखा—परंबै सेलवन का 'निराकरिप्पुकल', अश्वघोष का 'विसारनैगल', और साथ ही प्रोसिनियम मंच पर किए गए प्रयोग—मेलूर कल्याणसुंदरम का 'कालंगलिन निझलिल' और जेयनंतन का 'निनैक्कप्पडुम'।

उसी महोत्सव में समुदाय के प्रसन्ना ने एक व्याख्यान दिया। वे बादल सरकार की कार्यशाला के अनुभव साझा कर रहे थे और यह बता रहे थे कि कैसे थर्ड थिएटर ने समुदाय को नई दिशाओं में अग्रसर किया। वह भाषण उकसाने वाला था—सोच को झकझोरने वाला। कुछ लोग असहज हुए, कुछ ने उसे विवादास्पद कहा। लेकिन बहुतों की तरह—मैं भी—उससे भीतर तक जाग उठा।

उस भाषण के बाद, तीनों दिन मैंने प्रसन्ना के साथ चर्चाएँ कीं, बहसें कीं, संवाद किया। वह अनुभव मेरे लिए आँखें खोल देने वाला था। केरल में, त्रिवेंद्रम की कार्यशाला के बाद, थर्ड थिएटर की एक लहर-सी उठी। उनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम था—केरल के महान रंगकर्मी दिवंगत जोस चिरमुल। त्रिशूर स्कूल ऑफ ड्रामा (कालीकट विश्वविद्यालय) से प्रशिक्षित जोस चिरमुल ने 'प्रोसेशन', 'स्पार्टकस' और 'बोमा' जैसे नाटकों को गाँव-गाँव पहुँचाया।

केएसएसपी की अधिकांश कला जथा प्रस्तुतियों की रचना और निर्देशन उन्हीं के हाथों हुआ। करिवल्लूर मुरली द्वारा लिखित लघु संगीतमय नाटक 'ओरु चोथ्यम'—जो बर्तोल्त ब्रेष्ट से प्रेरित था—थर्ड थिएटर की सृजनात्मक शक्ति का शानदार उदाहरण है। खाली मंच पर कलाकारों के शरीर से ताजमहल खड़ा हो जाता है, युद्ध का मलबा रच दिया जाता है—सिर्फ़ देह, गति और कल्पना से। हमारे चेन्नई कलै कुझु ने इस नाटक को तमिल में प्रस्तुत किया। जब केएसएसपी ने तमिलनाडु में कला जथा निकालने का निर्णय लिया—तमिलनाडु विज्ञान मंच और पुदुच्चेरी

In 1989, a festival in Tiruchirappalli honoured Badal Sircar, featuring six of his plays, including 'Spartacus.' Yet there was little critical engagement with his evolution—from the proscenium playwright of 'Evam Indrajit' to the Third Theatre practitioner. As Safdar Hashmi once observed, it is important to establish a critical relationship with tradition. Many admirers, overwhelmed by Sircar's persona, failed to interrogate his ideas rigorously.

In the 1990s, Sircar conducted workshops in Chennai and Madurai. Participants like Sister Claire and Father Britto carried forward Third Theatre methods, especially within NGO contexts. Yet it is important to remember that open-air political theatre predates Sircar—it existed during IPTA days in the 1940s. Sircar's contribution lay in systematising, theorising, and popularising it nationally.

Before Third Theatre, Sircar was already celebrated for proscenium plays such as 'Evam Indrajit' and 'Baki Itihas.' At the height of fame, he renounced mainstream theatre and embraced street performance. He developed new actor-training methods and narrative forms suited to open-air political theatre. Works like 'Boma,' 'Spartacus,' and 'Baazi Khabar' exemplify this.

There are criticisms. Some argue that his plays lean toward existential despair and individualism, underplaying collective mass action. Yet regardless of agreement or disagreement, Badal Sircar indelibly transformed Indian theatre. He legitimised non-conventional spaces and expanded the boundaries of performance.

Samudaya's 50-year journey cannot be separated from this larger movement. From workshops and village performances to festivals and ideological debates, it helped democratise theatre. It connected art with people's struggles. It inspired generations across Karnataka, Kerala, and Tamil Nadu. For many of us, it was the beginning of understanding theatre as a weapon, as a pedagogy, as a collective act.

Badal Sircar lives with that legacy.

विज्ञान मंच के साथ—तो हमारे समूह को भी आमंत्रित किया गया। आठ कलाकार केएसएसपी से और आठ हमारे समूह से—कन्याकुमारी में दो सप्ताह की कार्यशाला हुई। मैंने सभी नाटकों का तमिल अनुवाद किया। रूप, गति, कोरियोग्राफी, संगीत—सब वैसा ही रहा, केवल भाषा बदली। फिर एक महीने तक हमने पूरे तमिलनाडु में लगभग 140 स्थानों पर प्रस्तुतियाँ दीं। हर जगह जनता की प्रतिक्रिया अविस्मरणीय थी। इस यात्रा ने हमें खुले मंच की संभावनाओं और सीमाओं—दोनों से परिचित कराया। केएसएसपी के नाटक—'एथिर्क्कणुम कूट्टारे' और 'कुरवर कली'—परंपरागत रंगमंच और आधुनिक राजनीतिक रंगमंच के सुंदर संगम थे।

मछुआरों का कोल्कली और पहाड़ी जनजातियों का कुरवरकली—समकालीन प्रश्नों से जुड़ गए। सन् 1987 में केएसएसपी ने भारत जन विज्ञान जथा शुरू की। पाँच समूह, पूरे देश में—हर भाषा में शुरू की गई। मैं भी उस दो महीने की यात्रा का हिस्सा था। लेकिन आलोचना भी ज़रूरी है। केएसएसपी की जथाओं ने थर्ड थिएटर को लोकप्रिय तो किया,पर कई बार उसे केवल संदेश-प्रसारण तक सीमित कर दिया। एक मीडिया रणनीति में बदल दिया। जोस चिरमुल ने 1983 में 'रूट्स' नामक समूह बनाया और बादल सरकार के नाटकों को गाँवों में ले गए। 1988 में 'बोमा' के एक प्रदर्शन को देखने आए थे,यूजीन वॉन एरवेन। दो हज़ार दर्शक—बिना माइक, बिना मेकअप—एक घंटे तक साँस रोके बैठे रहे। तमिलनाडु में भी प्रभाव पड़ा।

अश्वघोष उर्फ़ राजेंद्र चोलन का 'वट्टंगल'—एक कोलाज नाटक—मज़दूर जीवन के सवालों पर केंद्रित था। लेकिन राज्य सत्ता चुप नहीं रही। 44 से अधिक मुकदमे, राजद्रोह के आरोप—यहाँ तक कि चंद्रलेखा जैसी कलाकार भी नहीं बख्शी गईं। खुले मंच का रंगमंच लगभग ठहर गया। फिर 1984 में चेन्नई कलै कुझु और उम्मीद की वापसी।यह सब एक संयोग नहीं था। 1978 की बादल सरकार की कार्यशाला—एक श्रृंखला प्रतिक्रिया थी। यह आपातकाल के बाद का समय था—लोकतंत्र की भूख, अभिव्यक्ति की प्यास।

बादल सरकार ने खुले मंच का आविष्कार नहीं किया— इप्टा पहले से था। लेकिन उन्होंने उसे वैधता दी, उसे भाषा दी, उसे दिशा दी। प्रोसिनियम की चमक छोड़कर वे जनता के बीच आए और जीवन भर वहीं रहे। आलोचनाएँ रहेंगी—व्यक्तिवाद, निहिलिज़्म—लेकिन एक बात निर्विवाद है—भारतीय रंगमंच की सीमाओं को उन्होंने आगे बढ़ाया।खुले आकाश के नीचे रंगमंच को सम्मान दिलाया।

बादल सरकार; अपनी विरासत में आज भी जीवित हैं।

अनुवाद: रामआह्लाद चौधरी

Four-Day Cultural Festival in Punjab Ended giving the Message of Promoting Intellectual Growth

Urmil Monga, G. S. Monga

People's Literary Festival was organized by People's Forum Bargadi, Punjab from 25 to 28 December 2025 at Teachers' Home, Bathinda as in the last 8 years. In these four days, ten sessions of intellectual discussion were organized in which the youth, the old, women and men from all walks of life having interest in literature participated from surrounding area of about 100 km. It may be recalled that People's Forum has been organizing these festivals successfully taking into consideration the debate and discussion on social issues. People's Forum was started in the year 2000. This Forum publishes selected books in Punjabi every month to promote literature. To establish a library in one's home at the price of half a cup of tea, is its slogan. Having a membership of 750 people, this Forum sends a set of 4-5 books via registered post to each of its members monthly, postal charges being borne by the Forum itself.

People's Literary Festival: Significant Points

Corporate power is detrimental to democratic secularism throughout the world.

Due to technological revolution in the means of communication, the Corporates have taken control of media. As a result, serious issues have been raised regarding democratic values. In the inaugural session on the first day of the 8th four-day People's Literary Festival, an eminent journalist from Delhi, Sheetal P. Singh, in his speech stated that at present each kind of diversity is being given the colours of the rulers. He also said that the Fascist Powers in the world are using means of communication to neglect real social issues.

The 8th People's Literary Festival began with Kavishri (folk song) by a revolutionary team of Rasoolpur. The President of People's Forum Khushwant Bargadi welcomed the guests and said that this festival is

बौद्धिक विकास को आगे बढ़ाता चार दिवसीय साहित्यिक मेला सम्पन्न

उर्मिल मोंगा, जि. एस. मोंगा

पीपल्ज़ फोरम बरगाड़ी (पंजाब) द्वारा पिछले आठ वर्षों से सम्पन्न करवाया जा रहा 'पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल' 25 से 28 दिसम्बर 2025 को पिछले वर्षों की भांति टीचरज़ होम बठिंडा में आयोजित किया गया। इन चार दिनों में बौद्धिक विमर्श के दस सत्र आयोजित किए गए जिसमें बठिंडा शहर के आस-पास के लगभग 100 किलोमीटर के दायरे में साहित्यक रूचि से अभिप्रेरित समाज के अलग-अलग हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाले युवा, बुजुर्ग, महिला, पुरूष शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि सामाजिक सरोकारों पर संवाद के उद्देश्यों को सामने रखकर पीपल्ज़ फोरम द्वारा ये सफल आयोजन गत वर्षों से सम्पन्न करवाये जा रहे हैं जिसमें सैंकड़ों की संख्या में उत्साही व्यक्ति शामिल होते हैं। पीपल्ज़ फोरम की शुरूआत सन् 2000 में की गई थी। साहित्य को बढ़ावा देने के लिए फोरम द्वारा लगातार विश्व साहित्य की चयनित पुस्तकों की हर महीने पंजाबी भाषा में छपाई की जाती है। इनका स्लोगन है आधा कप चाय में अपने घर में पुस्तकालय स्थापित करें। 750 पाठकों की संख्या के साथ यह संस्था प्रत्येक महीने तीन सौ रूपए की एवज में प्रत्येक सदस्यों को 4-5 पुस्तकों का सैट डाक द्वारा भेजती है जिसका शुल्क भी संस्था द्वारा ही वहन किया जाता ह।

पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल: मुख्य अंश

दुनिया भर में कॉर्पोरेट सत्ता लोकतांत्रिक विविधता के लिए खतरा।

संचार साधनों में तकनीकी क्रांति आने के साथ मीडिया पर कॉर्पोरेट घरानों का प्रभुत्व स्थापित हो गया है। परिणामस्वरूप, वैचारिक लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए गंभीर खतरे पैदा हो गए हैं। आठवें चार-दिवसीय पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल के पहले दिन उद्घाटन सत्र में दिल्ली के प्रसिद्ध पत्रकार शीतल पी. सिंह ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि इस समय समाज में हर प्रकार की

a common platform for thoughtful dialogues. The chief guest, Jaswant Singh Jafar (Director, Language Department, Punjab) emphasized that such platforms are playing an important role in the intellectual growth of society. A book *Guru Nanak Di Sakhi* (The Story of Guru Nanak) by Colonel Balveer Singh Saran and a new issue of *Tasmaan* magazine were released on this occasion.

In the second session of the festival, a discussion was held on the book *Punjab: Faslon Ke Niche Se Khisakti Zameen* (Punjab: The Fleeting Land below the Crops). In it, the fact was highlighted that the diminishing land for agriculture is creating a huge cultural crisis also. To evaluate it economically only is not sufficient.

Farmers' leader Singara Singh Maan said that the fight to protect our land is a common fight for farmers and labourers. According to agricultural scientist, Navtej Singh Bains, government policies are faulty towards social views. Trade Union leader, Lakhbir Singh Longowal, discussed the social problems in achieving the legal rights of labourers. Gurpreet Singh Toor said that writings are essential to understand the harmful effects of policies such as 'Land Pooling'.

In the discussion on the role of social media on the second day of People's Literary Festival Bathinda, it came out that social media is focusing on creating two groups on the pretext of freedom of speech giving birth to intolerance and extremism. Dr Anirudh Kala (Psychologist) alleged that social media restricts the thinking power of a person by giving him/her an exclusively subjective space. Shewinder (journalist) held the view that by creating false narratives through social media people's awareness is being used against people only. Amandeep (lawyer, Punjab and Haryana High Court) said that minorities, women, Dalits and secularists are much trolled on social media. Even law and police could not protect them.

Punjabi novel and Agricultural crisis

In the second session organized with the help of Bhartiya Sahitya Academy, discussion was held on 'Punjabi novel and Agricultural Crisis'. It was emphasized that issues related to field labourers, agricultural women, environment and alternative

वैचारिक विविधता को समाप्त करके उसे सत्ता के अनुकूल रंग में रंगा जा रहा है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में फासीवादी ताकतें तकनीकी संचार साधनों की मदद से जन सरोकारों और लोक मुद्दों की अनदेखी कर रही हैं।

आठवें पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल की शुरुआत रसूलपुर इंकलाबी जत्थे की 'कवीसरी' (लोक गायन) से हुई। संस्था 'पीपल्ज़ फोरम' के अध्यक्ष खुशवंत बरगाड़ी ने मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि यह फेस्टिवल वैचारिक संवाद का एक साझा मंच है। मुख्य अतिथि जसवंत सिंह जफर (निदेशक, भाषा विभाग पंजाब) ने कहा कि ऐसे मंच समाज के बौद्धिक विकास में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। इस अवसर पर कर्नल बलबीर सिंह सरां की पुस्तक *गुरु नानक दी साखी* और *तासमान* पत्रिका का नया अंक भी जारी किया गया।

फेस्टिवल के दूसरे सत्र में पुस्तक *पंजाब: फसलों के नीचे से खिसकती जमीन* पर गंभीर चर्चा हुई। इसमें यह तथ्य उभर कर आया कि कृषि योग्य भूमि का कम होना एक बड़ा सांस्कृतिक संकट पैदा कर रहा है। इसका मूल्यांकन केवल आर्थिक दृष्टिकोण से करना सामाजिक रूप से उचित नहीं है।

किसान नेता सिंगारा सिंह मान ने कहा कि जमीन बचाने की लड़ाई किसान और मजदूर की साझा लड़ाई है। कृषि वैज्ञानिक नवतेज सिंह बैंस के अनुसार सरकारी नीतियां जमीन के सामाजिक पक्ष के प्रति दोषपूर्ण हैं। मजदूर नेता लखवीर सिंह लोंगोवाल ने मजदूरों के कानूनी अधिकार प्राप्त करने में आने वाली सामाजिक बाधाओं पर बात की। गुरप्रीत सिंह तूर ने कहा कि 'लैंड पूलिंग' जैसी खतरनाक प्रवृत्तियों को समझने के लिए ऐसे लेखन की आवश्यकता है।

बठिंडा पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल के दूसरे दिन सोशल मीडिया की भूमिका पर हुई चर्चा में यह तथ्य सामने आया कि सोशल मीडिया वैचारिक स्वतंत्रता का ध्रुवीकरण करके दो विरोधी गुट पैदा करता है, जिससे असहनशीलता और कट्टरता बढ़ती है। डॉ. अनिरुद्ध काला (मनोवैज्ञानिक) ने कहा कि सोशल मीडिया व्यक्ति को निजी स्पेस देते हुए उसकी वैचारिक शक्ति को सीमित कर देता है। शिविंदर (पत्रकार): ने कहा कि सोशल मीडिया के जरिए झूठे नैरेटिव (वृत्तांत) गढ़कर लोक चेतना को लोगों के ही खिलाफ इस्तेमाल किया जा रहा है। अमनदीप (वकील, पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट) ने कहा कि सोशल मीडिया पर अल्पसंख्यक, महिलाएं, दलित और धर्मनिरपेक्ष लोग सबसे ज्यादा ट्रोलिंग का शिकार होते हैं। कानून और पुलिस भी इन पीड़ितों की सुरक्षा नहीं कर पाते।

पंजाबी उपन्यास और कृषि संकट

भारतीय साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित दूसरे सत्र में 'पंजाबी उपन्यास और कृषि संकट' विषय पर चर्चा हुई। यह

agriculture models in addition to the crisis of middle class are discussed in a limited manner in the Punjabi novels. It is essential for the writers to work more seriously to understand the effects of capitalism and globalization on agriculture.

The book *Khamosh Kheton ki Huuk* (The Call of Silent Fields) edited by the writer Alfaz on the stories based on farmer revolution was released on this occasion. A Book Exhibition and Art Exhibition of Writers was the main attraction.

People's Literary Festival: Third Day

"Literature is Complementary to Documentation and is a Challenge to Established History"

In the first session of the Third Day under Jaswant Singh Kanwal Memorial Speech the discussion was held on 'The Political Story of Indian Nation: Literary Tradition and the question of Historical Awareness'. The eminent Historian from Delhi, Prof. Avinash Kumar said that the relation between history and literary tradition is very complex and multifaceted. Whereas Literature is complementary to documentation in history, at the same time it challenges the historical statements (governmental or established ones). He said that during the colonial rule many Hindu intellectuals considered the portrayal of an ideal past, its medieval decline and its revival essential to build Indian nation. During the era of progress, however, Munshi Premchand, Mahadevi Verma and Hazari Prasad Dwivedi posed questions against this Rightist approach. Swarn Singh Virk, the president of the session asserted that Punjabi folk tradition, literature and poetry could also be read in the form of history of common man.

In the second session, there was a discussion on the work of Professor Kishan Singh entitled *Political Discourse in Punjab* written in 1967. The economist, Dr Baldev Singh Shergill averred that the revolutionary characteristics of the Sikh movement have deep roots in the historical memories of hardworking farmers of Punjab and Prof. Kishan Singh considered this as the foundation of revolutionary politics. Sumel Singh Sidhu (Director, Adara 23rd March) said that during the present times of fascism on the one hand

बात सामने आई कि पंजाबी उपन्यासों में मध्यमवर्गीय किसानी के संकटों के अलावा खेत मजदूरों, किसान महिलाओं, पर्यावरण और वैकल्पिक कृषि मॉडलों पर बहुत सीमित बात हो रही है। पूंजीवाद और वैश्वीकरण के कृषि पर प्रभावों को समझने के लिए लेखकों को और गहराई से कार्य करने की जरूरत है।

इस मौके पर लेखक अल्फाज द्वारा संपादित किसान आंदोलन से संबंधित कहानियों की पुस्तक *खामोश खेतों की हूक* (पुकार) विमोचित की गई। पुस्तक प्रदर्शनी और लेखकों के चित्रों की प्रदर्शनी दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनी रही।

पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल: तीसरा दिन

"साहित्य इतिहास का पूरक, दस्तावेज और चुनौती है"

आठवें चार-दिवसीय पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल के तीसरे दिन के पहले सत्र में जसवंत सिंह कंवल स्मृति व्याख्यान माला के तहत 'भारतीय राष्ट्र का राजनीतिक किस्सा: साहित्यिक परंपरा और इतिहास-चेतना का सवाल' विषय पर चर्चा हुई। दिल्ली के प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. अविनाश कुमार ने कहा कि इतिहास और साहित्यिक परंपरा का रिश्ता जटिल और बहुआयामी है। साहित्य जहाँ इतिहास का पूरक और दस्तावेज है, वहीं वह इतिहास के (सरकारी या स्थापित) बयानों को चुनौती भी देता है। उन्होंने

बताया कि औपनिवेशिक शासन के दौरान हिंदी बुद्धिजीवियों ने एक आदर्श पुरातन, उसके मध्यकालीन पतन और अब उसके पुनरुत्थान की चुनौती को भारतीय राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक माना। प्रगतिशील दौर में प्रेमचंद, महादेवी वर्मा और हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस दक्षिणपंथी सोच के खिलाफ वैचारिक मोर्चा संभाला। सत्र के अध्यक्ष स्वर्ण सिंह विर्क ने कहा कि पंजाबी लोक-परंपरा, साहित्य और कविता को भी आम जनता के इतिहास के रूप में पढ़ा जा सकता है।

दूसरे सत्र में प्रो. किशन सिंह की 1967 की रचना *पंजाबी सूबे विच राजसी सेध* (पंजाब राज्य में राजनैतिक विमर्श) पर विस्तृत

mass uprising has become imperative, on the other hand Marxist thought is in a state of stagnation. The interpretation of the local and the popular mind of Punjab is the fundamental political task of present times, for which to read the writings of Prof. Kishan Singh, is the need of the hour.

People's Literary Festival: 4th and last day

The festival ended with Tu Agla Warka Phole (Turn on the Next Page).

On the last day of the festival the play by the playwright Dr Sahib Singh *Tu Agla Warka Phole* enthralled the audience. The touching story of the destruction of families generation after generation due to narrow prescriptions of religion and communalism has brought tears to the eyes of the audience. The day began with the progressive songs of Kuldeep Sirsa.

The Roots of communalism and Indian Democracy

The main speaker on this subject, Prof. Shamsul Islam from Delhi, said that the roots of present communalism can be traced back to the narrow aspects of Indian culture. The contemporary ruling party had nothing to do with the Freedom Struggle, that was why it was trying to reverse the legacy of that great historical struggle. There is more tension when the main political parties of India seemed to be affected by this harmful process.

The chief guest, Dr Dharam Veer Gandhi (Member of Parliament) said that evils such as religion, caste and race are taking Indian society in a retrograde direction and it is necessary to come out of it. He also replied to the questions put by the audience.

Token of gratitude and exhibition

The readers displayed high interest in and heartily appreciated the book exhibition and the art exhibition entitled 'Sukhan Jinah De Palle' (Those who are Prosperous) based on pictures of Punjabi writers.

Translation: Dr Vandana Sukheeja

चर्चा हुई। अर्थशास्त्री डॉ. बलदेव सिंह शेरगिल ने कहा कि पंजाब के मेहनतकश किसानों की ऐतिहासिक स्मृति में सिख लहर के क्रांतिकारी चरित्र के प्रति गहरा लगाव है और प्रो. किशन सिंह इस वेग को क्रांतिकारी राजनीति के आधार के रूप में प्रमाणित करते हैं। सुमेल सिंह सिद्धू (निदेशक, अदारा 23 मार्च) ने कहा कि आज के फासीवादी दौर में एक तरफ जन आंदोलनों का उठना अनिवार्य हो गया है, वहीं दूसरी तरफ मार्क्सवादी पक्ष बड़ी जड़ता (ठहराव) में हैं। पंजाब की स्थानीयता और स्मृति की जन-हितैषी व्याख्या करना इस समय का बुनियादी राजनीतिक कार्य है, जिसके लिए प्रो. किशन सिंह के लेखन को पुन: पढ़ना समय की मांग है।

पीपल्ज़ लिटरेरी फेस्टिवल: चौथा और अंतिम दिन

तू अगला वरका फोल के संदेश के साथ फेस्टिवल का समापन

फेस्टिवल के आखिरी दिन नाटककार डॉ. साहिब सिंह के एकल नाटक *तू अगला वरका फोल* (तुम अगला पन्ना पलटो) ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। धर्म और सांप्रदायिकता की संकीर्ण सीमाओं के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बर्बाद हुए परिवारों की मार्मिक कहानी ने सैकड़ों दर्शकों की आँखों में आँसू ला दिए। दिन की शुरुआत गायक कुलदीप सिरसा के प्रगतिशील गीतों से हुई।

सांप्रदायिकता की जड़ें और भारतीय लोकतंत्र

मुख्य वक्ता प्रो. शम्सुल इस्लाम (दिल्ली) ने कहा कि वर्तमान सांप्रदायिकता की जड़ें भारतीय संस्कृति के कुछ संकीर्ण हिस्सों में खोजी जा सकती हैं। समकालीन सत्ता (सरकार) कहीं भी आजादी के संघर्ष में दिखाई नहीं देती, इसलिए वह उस गौरवशाली संघर्ष के इतिहास को उलटने की कोशिश कर रही है। यह चिंता तब और बढ़ जाती है जब भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टियाँ भी इस खतरनाक प्रवृत्ति का शिकार दिखती हैं।

मुख्य अतिथि डॉ. धर्मवीर गांधी (सांसद) ने कहा कि धर्म, जाति और नस्ल जैसी बुराइयाँ भारतीय समाज को पीछे की ओर धकेल रही हैं, जिनसे मजबूती से उबरने की जरूरत है। उन्होंने दर्शकों के सवालों के जवाब भी दिए।

सम्मान और प्रदर्शनी

फेस्टिवल के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी में पाठकों ने विशेष रुचि दिखाई और 'सुखन जिन्ना दे पल्ले' (खुशहाल है जिनकी जिन्दगी) शीर्षक के तहत पंजाबी लेखकों के चित्रों की प्रदर्शनी को भी काफी सराहा गया।

Samudaya 50: A Look Back

Vasudeva Uchila

The 1970s. It was a time of crisis in Karnataka as well as in the country as a whole. Politically, socially and culturally, the reactions to this crisis were strong enough in Karnataka. Indira Gandhi, as the Prime Minister, started handling the democratic reactions of the people of the country in a repressive manner. The labour movement was being crushed. The farmers' organizations in Karnataka launched agitations for the implementation of the Land Reforms Act. The Dalit Sangharsh Samiti was formed in Karnataka in response to the exploitation of the agricultural labourers and Dalits. In 1974, socialist writers also organized a Kannada Sahitya Sammelana through the Progressive Writers' Union. Just at this time, the Internal Emergency imposed in the country in June 1975 created turmoils throughout the country.

At this time, popular writers and theatre lovers residing in Bangalore decided to form a cultural organization to face this crisis culturally. 'Samudaya' (meaning community) came into existence as a manifestation of the ideas of several like-minded progressive thinkers. 'Samudaya' started as a theatre group with the performance of a play called 'Huttava Badidere' on 17th August 1975 in Bangalore. Samudaya has now completed 50 years of its purposeful existence.

The Samudaya formulated its activities on the basis of 'Art for Life sake' as a challenge to the argument of 'Art for Art sake'. It identified art as a cultural medium and set itself the goal of responding to the sufferings of the downtrodden and those who have been deprived of all privileges till now. The Samudaya felt that it was its historical duty to oppose the anti-life values like ignorance, superstition, casteism, bigotry etc. that are deeply rooted in our society and to develop a scientific attitude which is essential for the all-round progress of the people. The Samudaya has since supported all forces working to build a new society where there is no exploitation of man by man. The Samudaya also works for the protection of the independence, integrity, democracy and commitment to world peace

समुदाय 50: एक पुनरावलोकन

वासुदेव उचिला

1970 का दशक, यह कर्नाटक ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए संकट का समय था। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर इस संकट के प्रति कर्नाटक में तीव्र प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलीं। प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी ने देश के लोगों की लोकतांत्रिक प्रतिक्रियाओं को दबाने के लिए दमनकारी तरीकों को अपनाया। श्रमिक आंदोलन को कुचला जा रहा था। कर्नाटक में किसानों के संगठनों ने भूमि सुधार अधिनियम के क्रियान्वयन की माँग को लेकर आंदोलन छेड़े। कृषि मज़दूरों और दलितों के शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में कर्नाटक में दलित संघर्ष समिति का गठन हुआ। 1974 में समाजवादी लेखकों ने प्रगतिशील लेखक संघ के माध्यम से एक कन्नड़ साहित्य सम्मेलन भी आयोजित किया। इसी समय, जून 1975 में देश में लगाए गए आंतरिक आपातकाल ने पूरे देश में उथल-पुथल मचा दी।

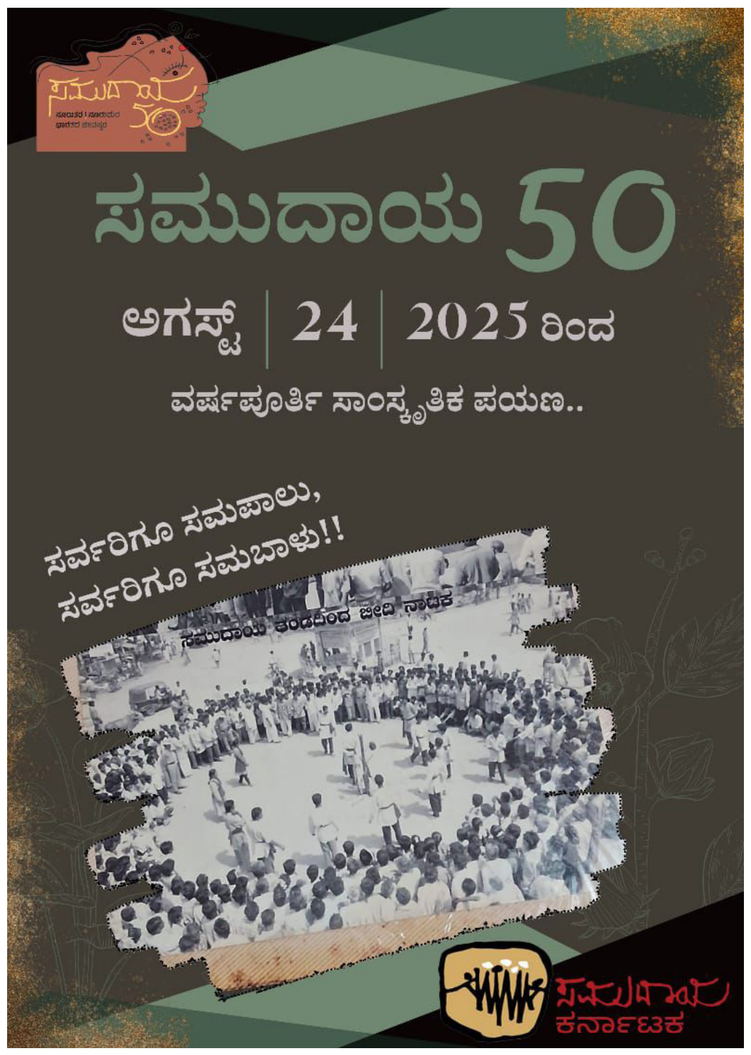

Samudaya 50 poster

इसी पृष्ठभूमि में, बेंगलुरु में रहने वाले लोकप्रिय लेखक और रंगमंच प्रेमियों ने इस संकट का सांस्कृतिक रूप से सामना करने के लिए एक सांस्कृतिक संगठन बनाने का निर्णय लिया। समान विचारधारा वाले कई प्रगतिशील चिंतकों के विचारों की अभिव्यक्ति के रूप में 'समुदाय' अस्तित्व में आया। समुदाय की शुरुआत एक रंगमंच समूह के रूप में हुई और 17 अगस्त 1975 को बेंगलुरु में 'हुट्टवा बडिदेरे' नामक नाटक के मंचन के साथ इसने अपनी यात्रा आरंभ की। आज समुदाय अपने उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व के 50 वर्ष पूर्ण कर चुका है।

समुदाय ने अपनी गतिविधियों की रूपरेखा 'कला जीवन के लिए' की अवधारणा के आधार पर तैयार की, जो 'कला कला के लिए' के तर्क के प्रति एक चुनौती थी। उसने कला को एक सांस्कृतिक माध्यम के रूप में पहचाना और अपने लिए यह लक्ष्य निर्धारित किया कि अब तक सभी विशेषाधिकारों से वंचित और शोषित वर्गों के दु:ख-दर्द के प्रति वह उत्तरदायी बने। समुदाय ने महसूस किया कि अज्ञान, अंधविश्वास, जातिवाद, संकीर्णता जैसी जीवन-

of the nation, which are the basic requirements for the struggles of social transformation. This was formulated as the aim of the Samudaya.

Eminent personalities like C. Veeranna, K. V. Narayana, K. R. Nagaraj, D. R. Nagaraj, Prasanna, Siddalingaiah and many others were involved in shaping the Samudaya. It was decided that many groups with such ideas should work with a single goal. S. Malathi, M. G.Venkatesh, C. K. Gundanna, Gangadhar Swamy, C. G. Krishnaswamy, Janardhana (Janni), C. Basavalingaiah and others worked to expand this cultural organization throughout the state. After Bangalore, in Mysore, then in Mangalore, Tumkur, Udupi, KGF, Samudaya units were started with the participation of like-minded cultural partners and later Samudaya units started functioning in remote cities and towns of the state. These units were predominantly theatre troupes.

In 1977, representatives of Samudaya groups from different towns that had been formed till then met in Bangalore and formed an association under the name 'Karnataka Rajya Samudaya Samanvaya Samiti' (Karnataka State Samudaya Co-ordination committee). The Constitution prepared for the association has been revised/expanded since then twice again to meet the needs of the situation. In addition to the plays (Ranga Samudaya), film screenings (Chitra Samudaya), seminars, publications (Literary Samudaya), bookshops (Grantha Samudaya), songs, demonstrations of folk art were proposed in the first Constitution itself and the organization has been working on using modern technological communication media as a means of artistic expression and dissemination in the subsequent revisions. During the third revision of the constitution held in 2016, the name of the organization was changed to 'Samudaya Karnataka Rajya Samiti' and also abbreviated as 'Samudaya Karnataka'.

Samudaya Varthapatra was the mouthpiece of Samudaya for many years, in which renowned writers wrote articles describing and analyzing the cultural phenomena of the state. Famous writers such as Baraguru Ramachandrappa, B. Gangadhar Murthy, S. Malathi—were among the first to run it as editors. The newspaper had been discontinued for some time and was later edited by writer H. V. Venugopal for a

विरोधी प्रवृत्तियों—जो हमारे समाज में गहराई से जड़ जमाए हुए हैं—उनका विरोध करना उसका ऐतिहासिक कर्तव्य है, तथा लोगों की सर्वांगीण प्रगति के लिए आवश्यक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना भी उसका दायित्व है। समुदाय ने तब से उन सभी शक्तियों का समर्थन किया है जो ऐसे नए समाज के निर्माण के लिए कार्यरत हैं जहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हो। समुदाय राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता, लोकतंत्र और विश्व शांति के प्रति प्रतिबद्धता की रक्षा के लिए भी कार्य करता है, क्योंकि ये सामाजिक परिवर्तन के संघर्षों के लिए बुनियादी आवश्यकताएँ हैं। यही समुदाय का उद्देश्य निर्धारित किया गया।

सी. वीरन्ना, के. वी. नारायण, के. आर. नागराज, डी. आर. नागराज, प्रसन्ना, सिद्धलिंगैया जैसे अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व समुदाय के गठन और स्वरूप निर्धारण में शामिल रहे। यह तय किया गया कि समान विचारों वाले अनेक समूह एक साझा लक्ष्य के साथ कार्य करें। एस. मालती, एम. जी. वेंकटेश, सी. के. गुंडन्ना, गंगाधर स्वामी, सी. जी. कृष्णास्वामी, जनार्दन (जन्नी), सी. बसवलिंगैया और अन्य साथियों ने इस सांस्कृतिक संगठन को पूरे राज्य में फैलाने का कार्य किया। बेंगलुरु के बाद मैसूर, फिर मंगलुरु, तुमकुर, उडुपी, केजीएफ में समुदाय की इकाइयाँ समान विचारधारा वाले सांस्कृतिक सहयोगियों की भागीदारी से स्थापित की गईं। बाद में राज्य के दूर-दराज़ के शहरों और कस्बों में भी समुदाय की इकाइयाँ सक्रिय हुईं। ये इकाइयाँ मुख्यत: रंगमंच समूहों के रूप में कार्य करती रहीं।

1977 में, तब तक गठित विभिन्न नगरों की समुदाय इकाइयों के प्रतिनिधि बेंगलुरु में एकत्र हुए और 'कर्नाटक राज्य समुदाय समन्वय समिति' (Karnataka Rajya Samudaya Samanvaya Samiti) के नाम से एक संघ का गठन किया। इस संघ के लिए तैयार किए गए संविधान को समय-समय की आवश्यकताओं के अनुरूप बाद में दो बार पुनरीक्षित और विस्तारित किया गया। प्रारंभिक संविधान में ही नाट्य प्रस्तुतियाँ (रंग समुदाय), फ़िल्म प्रदर्शन (चित्र समुदाय), संगोष्ठियाँ, प्रकाशन (साहित्यिक समुदाय), पुस्तकालय/पुस्तक-दुकानें (ग्रंथ समुदाय), गीत तथा लोककलाओं के प्रदर्शन को प्रस्तावित किया गया था। बाद के संशोधनों में संगठन ने आधुनिक तकनीकी संचार माध्यमों को कलात्मक अभिव्यक्ति और प्रसार के साधन के रूप में अपनाने की दिशा में भी कार्य किया। 2016 में हुए संविधान के तीसरे संशोधन के दौरान संगठन का नाम बदलकर 'समुदाय कर्नाटक राज्य समिति' रखा गया और इसे संक्षेप में 'समुदाय कर्नाटक' कहा जाने लगा।

समुदाय वार्तापत्र कई वर्षों तक समुदाय का मुखपत्र रहा, जिसमें प्रख्यात लेखकों ने राज्य की सांस्कृतिक परिघटनाओं का वर्णन और विश्लेषण करते हुए लेख लिखे। बरगुरु रामचंद्रप्पा, बी. गंगाधर मूर्ति, एस. मालती जैसे प्रसिद्ध लेखक इसके प्रारंभिक संपादकों में शामिल थे। यह पत्रिका कुछ समय के लिए बंद रही और बाद में लेखक एच. वी. वेणुगोपाल ने इसे अल्पकाल के लिए

short time. At the same time, the organization had also published some booklets through Samudaya Prakashana. It is also worth noting that the 'Bandaya Sahitya Sangathan' (Rebel Writers' Organisation) was born in 1979 under the leadership of writers who were initially active comrades of the Samudaya. It is true that theatre has been central to the history of the Samudaya. But street plays and drama processions that educate the public are also major activities of Samudaya.

The use of street drama as a cultural tool is a special feature of the Samudaya. In addition, the poems of struggle written by poet Siddalingaiah also turned into popular songs. Those songs are sung even today and are considered as revolutionary songs. When Prasanna directed a state-level street drama and theater training camp in Kumbalgod near Bangalore in June 1977, young theater enthusiasts from various parts of the state participated. This made the Samudaya realize that street drama is a powerful medium for public awareness. Later, the famous theater director Badal Sirkar also conducted a similar workshop for the Samudaya in 1979. Although street drama experiments were conducted in different linguistic regions of the country in their respective languages, street dramas were first taken as a jatha in Karnataka. In 1979, two month-long simultaneous jathas set out under the name 'Hosa Moulyagalatta' (towards new values) concluded in Dharwad after a month. Such a state-wide jatha by Samudaya also created excitement among the intelligentsia of the state. The play 'Belchi' performed in this jatha won great public acclaim. In the years after the jatha, many units of the Samudaya performed the play 'Belchi', and the number of these performances exceeded a thousand. In the following year (1980), the hardships of the farmers in the state increased, and farmers' organizations fought fiercely against the government.

By this time, there were 22 Samudaya units in the state. Street drama jathas reflecting the aspirations of the farmers' struggle were held in the districts where the Samudaya units were located in 1981 for a month across the state under the name of 'Raitanatta Jatha' (jatha towards farmers). The third jatha, titled 'Vishwa Shanthi Gagi Bannada Nade' (colourful jatha for world peace), was held in 1986 and a 120-foot-long

संपादित किया। इसी अवधि में संगठन ने 'समुदाय प्रकाशन' के माध्यम से कुछ पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित कीं। यह उल्लेखनीय है कि 1979 में 'बंडाया साहित्य संगठन' (विद्रोही लेखक संगठन) का जन्म भी उन लेखकों के नेतृत्व में हुआ, जो प्रारंभ में समुदाय के सक्रिय साथी रहे थे।

यह सत्य है कि रंगमंच समुदाय के इतिहास का केंद्रीय तत्व रहा है। किंतु जनता को शिक्षित करने वाले नुक्कड़ नाटक और नाट्य जुलूस (जाथा) भी समुदाय की प्रमुख गतिविधियाँ रही हैं। सांस्कृतिक औज़ार के रूप में नुक्कड़ नाटक का उपयोग समुदाय की एक विशिष्ट विशेषता है। इसके साथ ही कवि सिद्धलिंगैया द्वारा लिखी गई संघर्षपूर्ण कविताएँ लोकप्रिय गीतों में बदल गईं। ये गीत आज भी गाए जाते हैं और क्रांतिकारी गीतों के रूप में माने जाते हैं।

जून 1977 में जब प्रसन्ना ने बेंगलुरु के निकट कुंबलगोड में राज्य-स्तरीय नुक्कड़ नाटक और रंगमंच प्रशिक्षण शिविर का निर्देशन किया, तो राज्य के विभिन्न हिस्सों से युवा रंगमंच प्रेमियों ने इसमें भाग लिया। इससे समुदाय को यह एहसास हुआ कि नुक्कड़ नाटक जन-जागरूकता का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। बाद में, 1979 में प्रसिद्ध रंगमंच निर्देशक बादल सरकार ने भी समुदाय के लिए इसी प्रकार की एक कार्यशाला आयोजित की।

हालाँकि देश के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में अपनी-अपनी भाषाओं में नुक्कड़ नाटक के प्रयोग किए गए थे, किंतु कर्नाटक में पहली बार नुक्कड़ नाटकों को एक जाथा (नाट्य जुलूस) के रूप में प्रस्तुत किया गया। 1979 में 'होसा मौल्यगलत्ता' (नए मूल्यों की ओर) नाम से दो महीने तक चलने वाली दो समानांतर जाथाएँ निकलीं, जो एक महीने बाद धारवाड़ में संपन्न हुईं। समुदाय द्वारा आयोजित इस प्रकार की राज्यव्यापी जाथा ने राज्य के बुद्धिजीवियों में भी व्यापक उत्साह पैदा किया। इस जाथा में प्रस्तुत नाटक 'बेलची' को जनता का अपार समर्थन मिला। जाथा के बाद के वर्षों में समुदाय की अनेक इकाइयों ने 'बेलची' नाटक का मंचन किया और इन प्रस्तुतियों की संख्या एक हजार से भी अधिक हो गई।

अगले वर्ष (1980) राज्य में किसानों की कठिनाइयाँ और बढ़ गईं और किसान संगठनों ने सरकार के विरुद्ध तीव्र संघर्ष छेड़ दिया। इस समय तक राज्य में समुदाय की 22 इकाइयाँ सक्रिय थीं। किसानों के संघर्ष की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने वाली नुक्कड़ नाटक जाथाएँ 1981 में 'रैतनट्टा जाथा' (किसानों की ओर जाथा) के नाम से पूरे राज्य में एक महीने तक उन जिलों में आयोजित की गईं, जहाँ समुदाय की इकाइयाँ मौजूद थीं। तीसरी जाथा 'विश्व शांति गागी बन्नदा नडे' (विश्व शांति के लिए रंगीन यात्रा) शीर्षक से 1986 में आयोजित हुई। इसमें राज्य के प्रसिद्ध चित्रकार एस.बी. सोलाबक्कनावर और करिराजू द्वारा निर्मित 120 फुट लंबी चित्रित भित्ति को राज्य के प्रमुख नगरों में ले

painted wall created by the state's famous painters S. B. Solabakkanavar and Kariraju was taken to the major cities of the state and displayed for a month. In the next two years, due to lack of rain in Karnataka, there was a drought in the state. The Samudaya had completed 10 years in the state. Against this backdrop, 'The Decadal Jatha of the Samudaya Against the Great Drought' was organized in the districts; it was presented in the jatha plays that the drought was man-made and not just a natural one. During these seven or eight years, the Udupi and Bangalore units had started and made the 'film Samudaya', and in some other units, the 'literary Samudaya', was their main activity.

In 1989, in memory of the assassination of renowned theatre artist Safdar Hashmi, all the Samudaya theatre groups of the state came together on April 10 and 11 to organize a street theatre festival in Bangalore. In 1995, when the Samudaya completed 20 years, and in 2000, when the Samudaya was celebrating 25 years, three-day street theatre festivals were held at Bangalore. A drama and literary festival were held in Bangalore with the participation of all units. The situation where the Samudaya was organizationally weakened probably occurred when the Bharat Gyan Vigyan Jatha was organized throughout the state as part of the total literacy movement in 1990. This street drama jatha program, supported by the government, was held in all the districts of the state for a period of one and a half months. In the districts where Samudaya units existed, the jathas were very successful because Samudaya artists were involved.

As a result, many artists from the Samudaya units later joined cultural and theater groups outside the Samudaya or formed their own local theater groups. During this period, C. R. Bhat (Dharwad), R. K. Hudagi (Gulbarga), G. V. Karanth (Kundapur), Achyuta (KGF) worked mainly in keeping the Samudaya active. During this period, although some of them emerged from the Samudaya itself, Prasanna, C. G. Krishnaswamy, C. Basavalingaiah, H. Janardhan (also a singer), Suresh Anagalli, Mohanchandra, I. K. Boluwar, Shashidhara Barighat etc. became popular as talented directors even outside the Samudaya.

Similarly, Shashidhara Adapa (stage design), Muddanna (lighting design) who were former activists

जाकर एक महीने तक प्रदर्शित किया गया।

इसके बाद के दो वर्षों में कर्नाटक में वर्षा की कमी के कारण राज्य को सूखे का सामना करना पड़ा। इसी समय समुदाय ने राज्य में अपने दस वर्ष पूरे किए। इस पृष्ठभूमि में 'भीषण सूखे के विरुद्ध समुदाय की दशक जाथा' का आयोजन विभिन्न जिलों में किया गया। इन जाथा-नाटकों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया कि यह सूखा केवल प्राकृतिक नहीं, बल्कि मानव-निर्मित भी था। इन सात–आठ वर्षों के दौरान उडुपी और बेंगलुरु इकाइयों ने 'फ़िल्म समुदाय' की शुरुआत की, जबकि कुछ अन्य इकाइयों में 'साहित्यिक समुदाय' प्रमुख गतिविधि के रूप में विकसित हुआ।

1989 में, प्रख्यात रंगकर्मी सफ़दर हाशमी की हत्या की स्मृति में, राज्य की सभी समुदाय रंगमंच इकाइयाँ 10 और 11 अप्रैल को बेंगलुरु में एक साथ आईं और एक नुक्कड़ नाटक महोत्सव का आयोजन किया। 1995 में, जब समुदाय ने अपने 20 वर्ष पूरे किए, तथा 2000 में, जब समुदाय 25 वर्षों का उत्सव मना रहा था, तब बेंगलुरु में तीन दिवसीय नुक्कड़ नाटक महोत्सव आयोजित किए गए। इसके साथ ही सभी इकाइयों की भागीदारी से बेंगलुरु में नाट्य और साहित्यिक महोत्सव भी संपन्न हुए।

संगठनात्मक रूप से समुदाय के कमजोर पड़ने की स्थिति संभवत: 1990 में उत्पन्न हुई, जब संपूर्ण साक्षरता आंदोलन के अंतर्गत 'भारत ज्ञान विज्ञान जाथा' का आयोजन पूरे राज्य में किया गया। सरकार के सहयोग से आयोजित यह नुक्कड़ नाटक जाथा कार्यक्रम राज्य के सभी जिलों में डेढ़ महीने तक चला। जिन जिलों में समुदाय की इकाइयाँ थीं, वहाँ समुदाय के कलाकारों की सक्रिय भागीदारी के कारण ये जाथाएँ अत्यंत सफल रहीं। परिणामस्वरूप, समुदाय की कई इकाइयों के कलाकार बाद में समुदाय से बाहर के सांस्कृतिक और रंगमंच समूहों से जुड़ गए या उन्होंने अपने-अपने स्थानीय रंगमंच समूह बना लिए।

इस अवधि में सी. आर. भट (धारवाड़), आर. के. हुडगी (गुलबर्गा), जी. वी. कारंत (कुंदापुर), अच्युत (केजीएफ) ने मुख्य रूप से समुदाय को सक्रिय बनाए रखने का कार्य किया। इसी दौर में, यद्यपि ये सभी समुदाय से ही उभरे थे, फिर भी प्रसन्ना, सी. जी. कृष्णास्वामी, सी. बसवलिंगैया, एच. जनार्दन (जो एक गायक भी हैं), सुरेश अनगली, मोहनचंद्र, आई. के. बोलुवार, शशिधर बारिघाट आदि समुदाय के बाहर भी प्रतिभाशाली निर्देशकों के रूप में लोकप्रिय हुए। इसी प्रकार, समुदाय के पूर्व कार्यकर्ता शशिधर अडप्पा (मंच सज्जा) और मुद्धन्ना (प्रकाश व्यवस्था) मंच-सज्जा और तकनीकी डिज़ाइन के क्षेत्र में बड़े नाम बन गए।

2000 से 2005 के बीच जिस समुदाय में गिरावट आई थी, उसका पुनर्जीवन 2006 में हुआ और धारवाड़ में इसका पुनः सम्मेलन आयोजित किया गया। इस पुनर्जीवन में आर. के. हुडगी, टी. सुरेंद्रराव, बी. आई. इलिगेरा, अच्युत, के. एस. विमला,

of Samudaya are big names in the design of stage-related props.

Samudaya, which had been in decline from 2000 to 2005, was revived in 2006 and convened in Dharwad. R. K. Hudagi, T. Surendrarao, B. I. Iligera, Achyuta, K. S. Vimala, Vasudeva Uchilla, Devendra Gowda, Vasanthraj, etc. contributed to this revival. Since then, the Samudaya state committee has been making progress by revitalizing inactive units or organizing new types of activities.

In 2006, the district units jointly organized an anti-untouchability march under the name 'The Demonic Faces of Untouchability'. The 'Hunger Free Karnataka' march was organized by the units for 15 days in 2009-10 district-wise. The Cartoon march for 'Corruption Free Karnataka' was organized by some units in 2011. In the project to organize seminars on the Kannada literature of the decade in the units, one was organized on stories in Gulbarga in 2011, one on ideological literature in Mangalore in 2011, and one on criticism in Shivamogga in 2014. Apart from the seminars held within the framework of Sahitya Samudaya, literary reading and study camps were organized in Kundapur, Sirsi and Gotagodi in 2015.

As an activity to introduce art lovers in the urban areas, 'Budakattu Akhyana-Vyakhyana' (Reading and interpretation of Tribal poetry) was organized in Shivamogga (2013) and Dharwad (2015). Similar stories were also performed in special festivals organized in Gulbarga and Bangalore units. In 2016, a National Drama Festival was organized in Gulbarga. These kinds of National Drama Festivals are rarely held in cities outside Bangalore.

In 2016, some units organized activities on 'Dalit Sensation' to commemorate Ambedkar's 125th anniversary. Special lecture series activities were held in the units. State wide programmes were organised by the state committee where in several colleges lecturers were organised. During the course it was found that students and the teaching community have lots of misconceptions about reservations and about Ambedkar. The idea of Samvidhana Abhiyana germinated at that time. The Mangalore unit organized a symposium on Dalit autobiographies and

वासुदेव उचिला, देवेंद्र गौड़ा, वसंतराज आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। तब से समुदाय की राज्य समिति निष्क्रिय पड़ी इकाइयों को पुनः सक्रिय करने या नए प्रकार की गतिविधियाँ संगठित करने के माध्यम से निरंतर प्रगति कर रही है।

2006 में जिला इकाइयों ने संयुक्त रूप से 'अस्पृश्यता के दानवी चेहरे' शीर्षक से एक अस्पृश्यता-विरोधी पदयात्रा का आयोजन किया। 2009–10 में इकाइयों द्वारा जिला-स्तर पर 15 दिनों तक 'भूख मुक्त कर्नाटक' पदयात्रा आयोजित की गई। 2011 में कुछ इकाइयों ने 'भ्रष्टाचार मुक्त कर्नाटक' के लिए कार्टून पदयात्रा आयोजित की। इकाइयों में दशक की कन्नड़ साहित्य पर संगोष्ठियाँ आयोजित करने की परियोजना के अंतर्गत 2011 में गुलबर्गा में कहानी पर, 2011 में ही मंगलुरु में वैचारिक साहित्य पर और 2014 में शिवमोग्गा में आलोचना पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। साहित्य समुदाय के दायरे में आयोजित इन संगोष्ठियों के अतिरिक्त, 2015 में कुंदापुर, सिरसी और गोटागोडी में साहित्यिक पाठ और अध्ययन शिविर भी आयोजित किए गए।

शहरी क्षेत्रों के कला-प्रेमियों को जनजातीय साहित्य से परिचित कराने के उद्देश्य से 'बुडकाट्टु आख्यान–व्याख्यान' (आदिवासी कविता का पाठ और व्याख्या) कार्यक्रम 2013 में शिवमोग्गा और 2015 में धारवाड़ में आयोजित किया गया। इसी प्रकार के आख्यान गुलबर्गा और बेंगलुरु इकाइयों द्वारा आयोजित विशेष उत्सवों में भी प्रस्तुत किए गए। 2016 में गुलबर्गा में एक राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। बेंगलुरु से बाहर के शहरों में इस प्रकार के राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव बहुत ही कम आयोजित होते हैं।

2016 में अंबेडकर की 125वीं जयंती के अवसर पर कुछ इकाइयों ने 'दलित संवेदना' विषय पर गतिविधियाँ आयोजित कीं। इकाइयों में विशेष व्याख्यान-शृंखलाएँ संचालित की गईं। राज्य समिति द्वारा राज्य-स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनके अंतर्गत कई महाविद्यालयों में व्याख्यान संपन्न हुए। इस प्रक्रिया के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों और शिक्षकों के समुदाय में आरक्षण और डॉ. अंबेडकर को लेकर अनेक भ्रांतियाँ मौजूद हैं। यहीं से 'संविधान अभियान' (संविधान अध्ययन/पठन अभियान) का विचार अंकुरित हुआ। मंगलुरु इकाई ने कन्नड़ में दलित आत्मकथाओं और कहानियों पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

बेंगलुरु इकाई ने कई उल्लेखनीय कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इनमें 2011 में टैगोर की 150वीं जयंती का आयोजन विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। इसी प्रकार केजीएफ और धारवाड़ इकाइयों ने निरंतर नाटकों और अन्य कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से कला-परंपरा को जीवंत बनाए रखा है। रायचूर इकाई भी नाट्य प्रस्तुतियाँ कर रही है।

stories in Kannada. The Bangalore unit has organized some notable events. One of them was the Tagore 150th year event in 2011. Similarly, the KGF, Dharwad units have kept the art form alive by continuously conducting plays and other events. The Raichur unit is also performing plays.

In 2015, 40th year of Samudaya the National-level 3-day music festival organized by the state committee in Bangalore was attended by progressive musicians like Madan Gopal Singh, Sumangala Damodaran, M. D. Pallavi, etc. of international fame. In 2016, the All-India tour programme jointly undertaken by Palestine Freedom Theater and Jan Natya Manch was also organized in Bangalore and they organized performance and dialogues in various places. The Samudaya of Karnataka is proud of this.

This was the stage when a desire to build a state-level repertoire arose and its efforts were also carried out. The state committee formed the 'Kavyaranga Jatha', which is similar to a street dance procession, as a 'Ranga Sanchar' in 2015-16. The stage experiment of singing and performing famous Kannada poetry pieces in a group was devised by the new generation director Dr. Sripada Bhat. The Kavyaranga team prepared two more plays and toured all over the state, creating a different design in the theater. The next year, 2017, the second Kavyaranga team formed by Sripada Bhat toured some districts of the state by creating metaphors using new poems. In 2017, the state committee organized a symposium on 'Socialism and Literature' in Bangalore.

The gradual spread of communalism is a challenge to the pluralism and harmony of the country. This is the first challenge that Samudaya organizations have to face today. Samudaya units have been working to face this challenge culturally since the time when they performed Safdar Hashmi's play 'Aligarh'.

The Samudaya played an active role in the Friendly Human Chain organized in Bengaluru on 30 January, 2018. In the same year, the State Committee, in collaboration with local units, organized Friendly Karnataka Heritage Conferences in Udutadi, Maski and Chintamani, which are known as the friendly taluks of Karnataka.

2015 में समुदाय की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर राज्य समिति द्वारा बेंगलुरु में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर के संगीत महोत्सव में मदन गोपाल सिंह, सुमंगला दामोदरन, एम.डी. पल्लवी आदि अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रगतिशील संगीतकारों ने भाग लिया। 2016 में फ़िलिस्तीन फ़्रीडम थिएटर और जन नाट्य मंच द्वारा संयुक्त रूप से किए गए अखिल भारतीय दौरे का कार्यक्रम भी बेंगलुरु में आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुतियाँ और संवाद हुए। कर्नाटक का समुदाय इस उपलब्धि पर गर्व करता है।

यही वह चरण था जब राज्य-स्तरीय रंगमंच रिपर्टरी के निर्माण की आकांक्षा उत्पन्न हुई और इसके लिए प्रयास भी किए गए। 2015–16 में राज्य समिति ने 'काव्यरंग जाथा' का गठन किया, जिसे नुक्कड़ नृत्य जुलूस की तर्ज़ पर एक 'रंग संचार' के रूप में कल्पित किया गया। प्रसिद्ध कन्नड़ कविताओं को समूह-गायन और अभिनय के रूप में प्रस्तुत करने का यह मंचीय प्रयोग नई पीढ़ी के निर्देशक डॉ. श्रीपाद भट ने रूपायित किया। काव्यरंग दल ने दो और नाट्य प्रस्तुतियाँ तैयार कीं और पूरे राज्य में भ्रमण करते हुए रंगमंच की एक भिन्न डिज़ाइन प्रस्तुत की।

अगले वर्ष 2017 में, श्रीपाद भट द्वारा गठित दूसरे काव्यरंग दल ने नई कविताओं के माध्यम से रूपक रचते हुए राज्य के कुछ जिलों का दौरा किया। 2017 में ही राज्य समिति ने बेंगलुरु में 'समाजवाद और साहित्य' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

सांप्रदायिकता का क्रमिक प्रसार देश की बहुलता और सौहार्द के लिए एक गंभीर चुनौती है। आज समुदाय संगठनों के सामने यह पहली और प्रमुख चुनौती है। समुदाय की इकाइयाँ सफ़दर हाशमी के नाटक 'अलीगढ़' के मंचन के समय से ही इस चुनौती का सांस्कृतिक रूप से सामना करने का प्रयास करती रही हैं।

30 जनवरी 2018 को बेंगलुरु में आयोजित 'फ्रेंडली ह्यूमन चेन' (मैत्रीपूर्ण मानव-श्रृंखला) में समुदाय ने सक्रिय भूमिका निभाई। इसी वर्ष राज्य समिति ने स्थानीय इकाइयों के सहयोग से उडुतड़ी, मस्की और चिंतामणि—जो कर्नाटक के 'मैत्रीपूर्ण तालुका' के रूप में जाने जाते हैं—में 'फ्रेंडली कर्नाटक विरासत सम्मेलन' आयोजित किए।

2018 से 2021 के बीच समुदाय कर्नाटक और 'सहयान' होन्नावर के संयुक्त नेतृत्व में राज्य के सभी तालुकों/होबलियों में 'संविधान ओदु अभियान' (संविधान पठन अभियान) चलाया गया। सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एच. एन. नागमोहन दास द्वारा लिखित पुस्तिका के साथ वे स्वयं राज्य भर में यात्रा करते हुए व्याख्यान देते रहे और संविधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। यह अभियान मुख्यतः छात्रों को लक्षित था और कई महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में व्याख्यान आयोजित किए गए। उस समय राज्य समिति के संयुक्त सचिव डॉ. विट्टला भंडारी (जो 'सहयान' से भी जुड़े थे) और के. एस.

‘Samvidhana Odu Abhiyan’ (Campaign of Reading Constitution) was organized from 2018 to 2021 in all taluks/hoblis across the state under the joint leadership of Samudaya Karnataka and ‘Sahayana’ Honnavar. With the booklet written by retired High Court Justice H. N. Nagamohan Das, the latter himself traveled across the state, lectured and created awareness about the Constitution. The campaign was targeted to reach the students and, in several colleges and universities lectures were organised.

The then joint secretaries of Samudaya state committee Dr. Vittala Bhandari (an associate of Sahayana also) and K. S. Vimala took the responsibilities and had a massive campaign throughout the state. The campaign caught the attention of several other institutions and on the request of state legal services authorities, police department, and several other social organizations these programmes were performed in their institutions. Even in Covid time, under the agies of NSS in more than 20 universities online lectures were held and the Justice himself delivered the lectures. More than one lakh copies of the book *Samvidhana Odu* have been sold. This book has also been translated into English, Hindi and Malayalam. Apart from the theatre activities, this campaign is a major cultural program conducted by the Samudaya.

The Samudaya has used new tools for its cultural activities. The Kundapur unit is staging stories, poems, and text pieces as stage performances once a month. During Makara Sankranthi, the kite festival is celebrated as a festival of the people in the KGF unit. Since its inception, the Bangalore unit has been attracting attention among other cultural organizations with its diverse stage experiments, seminars, and dance and song programs. Although the Dharwad, KGF, Kundapur, and Gulbarga units, which are far away from Bangalore, are conducting high-level activities, they are not getting enough media publicity.

The Samudaya State Committee, in collaboration with the ‘Janashakti’ Media House, conducted a cinema tour called ‘Picture Payana’ on the web media every week for some time. ‘Picture Payana’ celebrated the centenary of Satyajit Ray, Mrinal Sen, and Ritwik Ghatak on the web media by introducing

विमला ने इसकी ज़िम्मेदारी संभाली और पूरे राज्य में एक व्यापक अभियान चलाया।

इस अभियान ने अनेक अन्य संस्थानों का भी ध्यान आकर्षित किया और राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, पुलिस विभाग तथा कई सामाजिक संगठनों के अनुरोध पर उनके संस्थानों में भी ये कार्यक्रम आयोजित किए गए। कोविड काल में भी, एनएसएस के तत्वावधान में 20 से अधिक विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें स्वयं न्यायमूर्ति ने व्याख्यान दिए। *संविधान ओदु* पुस्तक की एक लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। इस पुस्तक का अंग्रेज़ी, हिंदी और मलयालम में अनुवाद भी किया गया है। रंगमंचीय गतिविधियों के अतिरिक्त, यह अभियान समुदाय द्वारा संचालित एक प्रमुख सांस्कृतिक कार्यक्रम है।

समुदाय ने अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए नए औज़ारों का भी उपयोग किया है। कुंदापुर इकाई प्रत्येक माह कहानियों, कविताओं और गद्यांशों को मंचीय प्रस्तुतियों के रूप में प्रस्तुत करती है। केजीएफ इकाई में मकर संक्रांति के अवसर पर पतंग उत्सव को जन-उत्सव के रूप में मनाया जाता है। स्थापना के समय से ही बेंगलुरु इकाई अपने विविध मंचीय प्रयोगों, संगोष्ठियों तथा नृत्य–संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से अन्य सांस्कृतिक संगठनों के बीच विशेष ध्यान आकर्षित करती रही है। यद्यपि बेंगलुरु से दूर स्थित धारवाड़, केजीएफ, कुंदापुर और गुलबर्गा इकाइयाँ उच्च स्तर की गतिविधियाँ संचालित कर रही हैं, फिर भी उन्हें पर्याप्त मीडिया प्रचार नहीं मिल पाता।

समुदाय राज्य समिति ने ‘जनशक्ति’ मीडिया हाउस के सहयोग से कुछ समय तक वेब मीडिया पर साप्ताहिक रूप से ‘पिक्चर पयाना’ नामक सिनेमा यात्रा का आयोजन किया। ‘पिक्चर

पयाना’ के माध्यम से सत्यजीत रे, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक की जन्मशती को उनके फ़िल्मों के परिचय के साथ वेब मीडिया पर मनाया गया। प्रसिद्ध फ़िल्मकार अदूर गोपालकृष्णन ने ऑनलाइन मृणाल सेन जन्मशती व्याख्यान-शृंखला का उद्घाटन किया, जिसमें प्रसिद्ध कन्नड़ फ़िल्मकार गिरीश कासरवल्ली भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के दौरान कई युवा फ़िल्म समीक्षकों को भी मंच मिला। ऑडियो, वीडियो, वेब और एआई सहित सभी नए मीडिया में जन-संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना समुदाय की

their films. Famous film maker Aduru Gopala Krishnan inaugurated online Mrinal Sen centenary celeberation lecture series, and this was attended by famous kannada film maker Girish Kasaravally. Several young cinema critics were introduced during this programme. Samudaya has a responsibility to represent popular culture in all new media, including audio, video, web, and AI.

Although it is true that the Samudaya has completed 50 years of its existence, the founders of this movement had been associated with the Progressive Writers Association, formed in 1936, and the Indian People's Theatre' Association (IPTA), formed in 1941. Samudaya Karnataka is a federation of many groups. Although the ups and downs of one or two groups have affected the federation to a great extent, the Samudaya has carried out its duties in the past 50 years. The Samudaya has started its 50th anniversary celebrations. This year (2025) started with a 3-day cultural festival in Bangalore at the end of August. The Mysore unit organized a 3-day festival in October. All Samudaya units are preparing to organize the Samudaya 50 festival.

Apart from the theatre directors of Karnataka, famous theatre workers of other languages like M. S. Satyu. Badal Sircar, Devendra Raj Ankur, Ratan Thiam, Pralayan, Sudhanva Deshpande, Naseeruddin Shah etc. have interacted with the Samudaya and have been instrumental in developing the Samudaya cultural movement. It is noteworthy that all the leftist writers of Karnataka—including many famous writers—worked hand in hand with the Samudaya at one time or the other.

एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।
यद्यपि यह सत्य है कि समुदाय ने अपने अस्तित्व के 50 वर्ष पूरे कर लिए हैं, परंतु इस आंदोलन के संस्थापक 1936 में गठित प्रगतिशील लेखक संघ और 1941 में गठित इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (IPTA) से भी जुड़े रहे हैं।

समुदाय कर्नाटक अनेक समूहों का एक महासंघ है। यद्यपि एक—दो इकाइयों के उतार—चढ़ाव ने कभी-कभी इस महासंघ को काफी हद तक प्रभावित किया है, फिर भी समुदाय ने बीते 50 वर्षों में अपने दायित्वों का निरंतर निर्वाह किया है।

समुदाय ने अपने 50वें स्थापना वर्ष के समारोहों की शुरुआत कर दी है। इस वर्ष (2025) अगस्त के अंत में बेंगलुरु में आयोजित तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव के साथ इसकी शुरुआत हुई। मैसूर इकाई ने अक्टूबर में तीन दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया। समुदाय की सभी इकाइयाँ ‘समुदाय 50’ महोत्सव के आयोजन की तैयारी में जुटी हुई हैं।

कर्नाटक के रंगमंच निर्देशकों के अलावा अन्य भाषाओं के प्रसिद्ध रंगकर्मियों—जैसे एम. एस. सत्यु, बादल सरकार, देवेंद्र राज अंकुर, रतन थियम, प्रलयन, सुधन्वा देशपांडे, नसीरुद्दीन शाह आदि—ने भी समुदाय के साथ संवाद किया है और समुदाय के सांस्कृतिक आंदोलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह उल्लेखनीय है कि कर्नाटक के सभी वामपंथी लेखक,जिनमें अनेक प्रतिष्ठित लेखक भी शामिल हैं,वे सभी लेखक किसी न किसी समय समुदाय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते रहे हैं।

अनुवाद: रामआह्लाद चौधरी

Editorial Board

Malini Bhattacharya — मालिनी भट्टाचार्य
Akbar Ahmed — अकबर अहमद
Ashokan Charuvil — अशोकन चारुविल
K.K. Sulekha — के के सुलेखा
K.S. Vimala — के एस विमला
Manoj Kulkarni — मनोज कुलकर्णी
M.K. Manoharan — एम के मनोहरन
Aadhavan Dheetchanya — आधवन् धीत्चन्या
T.P. Venugopalan — टी पी वेणुगोपालन
E.P. Rajagopalan — ई पी राजगोपालन
Sudhanva Deshpande — सुधन्वा देशपांडे
Ramahlad Choudhary — रामआह्लाद चौधरी

संपादक-मंडल